चन्दामामा
जनवरी १९६६
75 P

दुधमुँहे
बच्चों के लिये
डाबर
की नई देन....
डाबर
जन्मघूँटी
डाबर
(डा० एस० के० बर्म्मन) प्राइवेट लि०,
कलकत्ता-२६

जनवरी १९६६

★

विषय - सूची

संपादकीय १
भारत का इतिहास २
नेहरू की कथा ५
नवाबनन्दिनी (धारावाहिक) ९
तीन निम्बू १७
बूढ़ा भिखारी २३
अचिन्तित पराजय ३३
मिट्टी का माधव ४१
उत्तरकाण्ड (रामायण) ४९
जलन्धर ५७
संसार के आश्चर्य ६१
फोटो परिचयोक्ति प्रतियोगिता ६४

★

एक प्रति ०-७५ पैसे
वार्षिक चन्दा रु. ८-४० पैसे

अपने बच्चे को सर्दी-ज़ुकाम से पीड़ित न होनें दें

विक्स वेपोरब तुरन्त आराम पहुंचाता है...
आपका बच्चा आसानी से सांस ले सकता है...वह रात भर आराम से सो सकता है।

आपके बच्चे की सुख-सुविधा आप पर ही निर्भर है। इस लिए जब आपके बच्चे में सर्दी-ज़ुकाम के आरम्भिक लक्षण दिखायी दें, जैसे नाक का बहना, आंखों से पानी गिरना, गले का बैठ जाना, सांस लेने में तकलीफ, तो विक्स वेपोरब मलिये।

विक्स वेपोरब आपके बच्चे के सर्दी-ज़ुकाम का सर्वोत्तम इलाज है क्योंकि यह सर्दी से प्रभावित उन सभी भागोंपर, जैसे नाक, छाती और गले में, जहां सर्दी की पीड़ा सबसे ज्यादा होती है, असर करता है और आपके बच्चे की कोमल त्वचा को इससे तनिक भी क्षति नहीं पहुंचती।

बस विक्स वेपोरब मलिये और अपने बच्चे को कम्बल ओढ़ा कर आराम से बिस्तरपर सुला दीजिये। विक्स वेपोरब अपना काम करता रहेगा। जबकि आपका बच्चा रात भर चैन की नींद सोता रहेगा। सुबह तक सर्दी-ज़ुकाम की पीड़ा जाती रहेगी और आपका लाडला मुन्ना स्वस्थ और हंसता-खेलता उठेगा।

विक्स वेपोरब ३ साइज़ में

हिन्दुस्तान को अपने किसानों पर गर्व है। वे खून-पसीना एक करके फसलें पैदा करते हैं, जिससे सरहद पर तैनात सैनिकों को खाना मिलता है; कारखानों में काम करने वालों को खाना मिलता है; देश की जनता को खाना मिलता है। वे दिन रात अधिक से अधिक पैदा करने में जुटे हैं ताकि देश में ही सबके लिए अनाज पैदा हो सके। हमारे किसान समझते हैं कि जितना कम अनाज हमें विदेशों से मंगाना पड़ेगा, उतना ही अधिक धन हम देश के विकास और रक्षा पर खर्च कर सकेंगे। इस अथक मेहनत के बदले वे केवल आपका अथक परिश्रम चाहते हैं।

एक महान देश हमारा
एक महान राष्ट्र

चन्दामामा

संचालक: चक्रपाणी

हम पिछले कई मास से स्व. जवाहरलाल नेहरू की जीवनी धारावाहिक रूप से दे रहे हैं। श्री नेहरू का जीवन एक उत्तम, उदात्त, देशभक्त का जीवन है...प्रति भारत वासी के लिए आदर्श है।

हमारे देश के सामने बहुत सी समस्यायें हैं और हम उनको हल करने में कार्यरत भी हैं। नेहरू का जीवन यह सिखाता है कि बड़ी बड़ी समस्यायें भी परिश्रम के कारण आसान हो जाती हैं।

आज जब कि हमारा देश संकट से गुजर रहा है, हमें अपनी मातृ देश के प्रति भक्ति दिखानी होगी और जो कुछ उसके हित में है, उसे करना होगा।

वर्ष: १७ जनवरी १९६६ अंक: ५

भारत का इतिहास

औरन्गजेब सुन्नी मुसलमान था। उसने हुकूमत को मजहब से दूर न रखा, बल्कि वह कुरान के सिद्धान्तों के मुताबिक शासन करने लगा। उसने मनोरंजन और नृत्य वगैरह बन्द कर दिये। उसे "सिंहासनारुढ़ सन्यासी" कहा गया है। १६७९ में, उसने दूसरे धर्मवालों पर जजिया कर लगाया।

औरन्गजेब के इन नये कानूनों के खिलाफ़ पहले पहल आवाज़ उठानेवाली मथुरा की कुछ जातियाँ थीं। तिलपत ज़मीन्दार के नेतृत्व में, उन्होंने पहले शिकायत की, फिर उन्होंने फौजदार अब्दुल नबी को मार दिया। उसकी दुष्टता से वे इस तरह एक वर्ष तक बच सके। फिर उसके बाद हसन अली खान सेना के साथ फौजदार बनकर आया। उसने गोक्ला को मरवा दिया और उसके परिवार को मुसलमान बना दिया। १६७५ इन जातियों ने राजाराम के नेतृत्व में फिर विद्रोह किया। १६८८ में, उन्होंने सिकन्दरा में अकबर की मजार लूटी। राजाराम मार दिया गया। यह विद्रोह भी दबा दिया गया।

औरन्गजेब के खिलाफ़ दूसरी बगावत करनेवाला बुन्देल राजा छत्रसाल था। छत्रसाल का पिता चम्पतराय औरन्गजेब के विरुद्ध जो पहिले विद्रोह हुआ था, उसमें था, पर जब उसको पकड़े जाने की आशंका हुई, तो उसने आत्महत्या कर ली। शिवाजी की देखा देखी, छत्रसाल अपने धर्म के लिए और बुन्देल की स्वतन्त्रता के लिए वीरोचित रूप से लड़ा, वह कई बार मुगलों के विरुद्ध जीता भी। बुन्देलखण्ड के

लोग और माल्वा के हिन्दू उसके पीछे दृढ़ रूप से थे। माल्वा के पूर्व में, उसने अपने स्वतन्त्र राज्य की स्थापना की। १७३१ में, अपनी मृत्यु तक उसने उस पर शासन भी किया। उसकी राजधानी पन्ना थी।

औरन्गजेब ने सिखों से भी दुश्मनी मोल ली। देश में १५, १६ वीं सदी में जब धर्म का पुनरुद्धार होने लगा, तो गुरु नानक ने सिख धर्म की स्थापना की। नानक के बाद अंगद, अमरदास, रामदास सिख गुरु हुए। अकबर को रामदास के प्रति बड़ी भक्ति थी। उसने रामदास को अमृतसर के पास कुछ भूमि दी। वहाँ एक तालाब था। उसे बड़ा करके, वहाँ सुप्रसिद्ध गुरुद्वारा बनाया गया।

पाँचवें सिख गुरु अर्जनमल ने (१५८१-१६०६) में सिख धर्म का खूब प्रचार किया। उसने "आदि ग्रन्थ" रचा। यह सिखों को आदि धर्म ग्रन्थ है। उसके समय में धन भी खूब एकत्रित हुआ, उसने राजनीति में भाग लिया। खुसरो की उसने तरफ़दारी की। इसलिए जहाँगीर ने उसको राजद्रोही बताया और उसको १६०६ में मरवा दिया। उसके लड़के हरगोविन्द ने
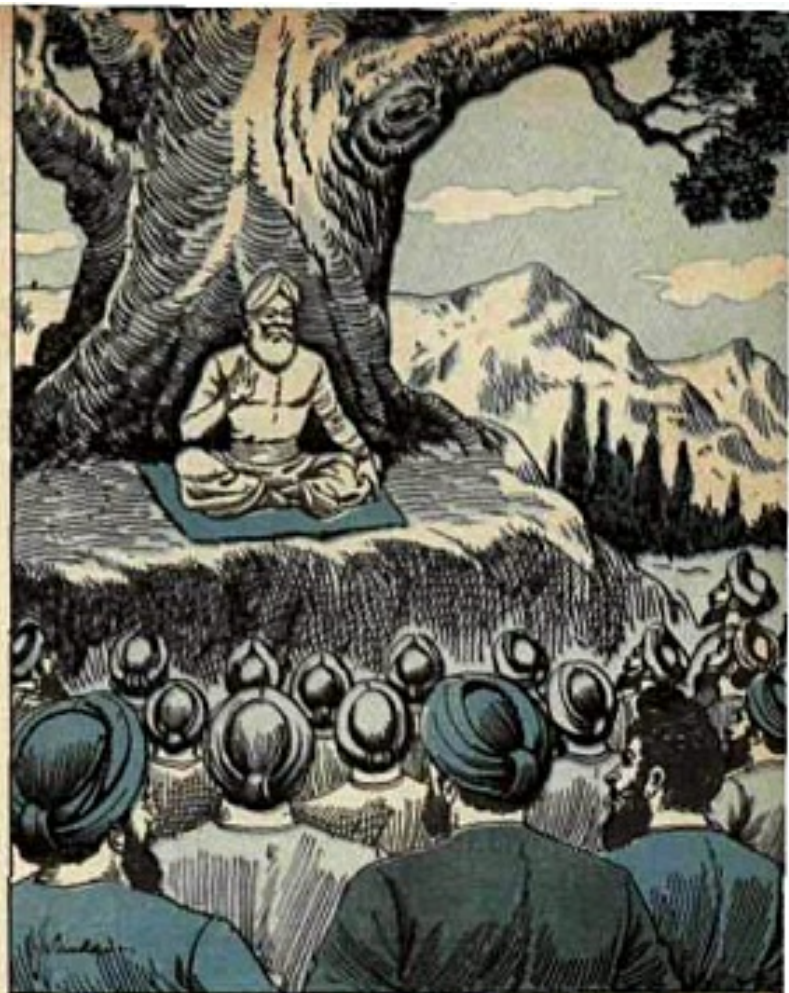
सेना इकट्ठी की और अमृतसर के पास मुगलों से लड़ा और उस युद्ध में जीता भी।

१६६८ में तेग बहादुर नाम के सिख गुरु ने बादशाह के खिलाफ़ बगावत की और काश्मीर के ब्राह्मणों को उसने उकसाया। औरन्गजेब उसे पकड़कर दिल्ली लाया और उससे उसने पूछा—"तुम मुसलमान बनते हो या अपना सिर देते हो? तेग बहादुर अपना सिर देने के लिए तैयार हो गया। औरन्गजेब ने जब उसका सिर ले लिया, तो सिख औरन्गजेब के विरुद्ध युद्ध करने के लिए तैयार होने लगे।

तेग बहादुर का लड़का गुरु गोविन्द भारत की अपूर्व विभूतियों में एक है। उसने सिखों के आचार व्यवहार के नियम बनाये। यह भी कहा कि वे शत्रुओं को पीठ न दिखायें। वह बड़ा वीर था। उसने मुगलों से कई युद्ध किये।

मुगल साम्राज्य की सेवा करनेवाले राजदूतों को विरोधी बनाकर, औरन्गजेब ने बहुत नुक्सान उठाया। उसने जल्दबाजी में, राजा जयसिंह के बाद अम्बर को, जसवन्त-सिंह के बाद मारवाड़ को अपने आधीन कर लिया। इससे राजपूत परिवार बिगड़ उठे। मारवाड़ के राथौड़ और मेवाड़ के सिंसादिया, एक हो गये। उनमें दुर्गादास नाम का वीर था। उसकी प्रभु भक्ति, पराक्रम, युद्ध नीति असाधारण थी। औरन्गजेब ने राजस्थान को अपने पुत्रों के साथ सेना भेजी, चित्तौड़ आसानी से आधीन हो गया। अपने लड़के अकबर के आधीन, चित्तौड़ में कुछ सेना छोड़, औरन्गजेब बाकी सेना लेकर, अजमेर गया। राजपूतों ने अकबर सेना के विरुद्ध भयंकर गोरिल्ला युद्ध किये। मुगल सेना के उन्होंने छक्के छुड़ा दिये। औरन्गजेब ने यह सोच कर कि इस अपराजय का कारण, अकबर की असमर्थता ही थी, उसे सेना नायक के पद से हटा दिया। अकबर राजपूतों की सहायता की महत्ता जानता था। उसने ७० हज़ार राजपूत सैनिकों को लेकर, अपने पिता के खिलाफ़ बगावत तो की, पर वह सफल न हो सका। यदि दुर्गादास मदद न करता, तो अकबर औरन्गजेब द्वारा दण्डित होता। वह फारस भाग गया। वहाँ १७०४ में वह मर गया।

नेहरू की कथा

[१८]

जवाहर जेल से जब छूटकर आये, तो कान्ग्रेस संस्था की हालत बड़ी अजीब थी। उसमें अब आदर्शों के लिए जगह न थी। नेता दो वर्गों में बँट गये थे। राजनैतिक गुट इधर उधर के हथकण्डे अखतियार करके कान्ग्रेस को अपने वश में करना चाहते थे।

देश में आन्दोलन ठंडा पड़ गया था। एक वर्ग कोई परिवर्तन न चाहता था। वे सिर्फ़ सुधार करना चाहते थे, राजनैतिक आन्दोलन उनका उद्देश्य न था। दूसरा वर्ग स्वराजवादियों का था। वे शासन सभाओं में घुसकर, सरकार से लड़ना चाहते थे।

स्वराजवादियों का नेता चित्तरंजन दास, मोतीलाल नेहरू थे। यूरुप से लौटे हुए मोहम्मद अली भी इस ख्याल के थे कि शासन सभा का बहिष्कार न किया जाय, बल्कि आयरिश विप्लवकारियों की तरह, चुनाव लड़कर, अपनी असहमति प्रकट करनी चाहिए। परन्तु कान्ग्रेस के आन्दोलन के नेता गान्धीजी को शासन सभा में प्रवेश करना, बिल्कुल गँवारा न था। नेताओं ने यदि चुनावों में लड़कर, शासन सभा में भाग न लिया, तो लोगों को कुछ समझ न आयेगा। यदि चुनावों का ही बहिष्कार किया गया, तो वे सब कुछ समझ जायेंगे। यही नहीं, यदि लोगों को शासन सभा की आदत पड़ गई, तो उसे छुड़ाना मुश्किल हो जायेगा।
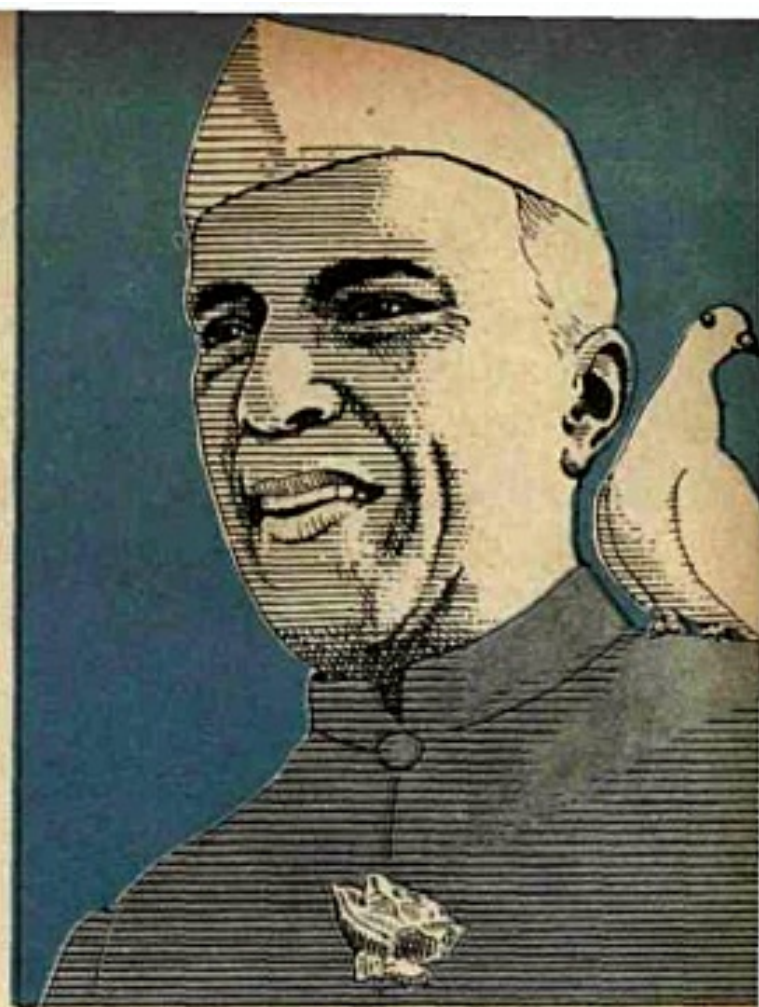
जवाहर यद्यपि गान्धीजी के विचार के पक्षपाती थे परन्तु कान्ग्रेस में, दो वर्गों का बन जाना बिल्कुल उनको न पसन्द था। उन्होंने अपने प्रान्तों में कान्ग्रेस को सुधारने की कोशिश की। वे प्रान्तीय कमेटी के मन्त्री थे, परन्तु वे बड़े चिन्तित थे। वे काम तो करना चाहते थे, पर उनके मन को कई सन्देह बींध रहे थे। उन्होंने किया तो बहुत कुछ पर कोई खास फायदा न हुआ।

इतने में जवाहरलाल नेहरू अलहाबाद म्युनिस्पेल्टिी के चेयरमेन बना दिये गये। सुनते हैं, चेयरमेन के चुनाव लड़ने के लिए उन्होंने चुनाव से पेन्तालीस मिनट पहिले ही निश्चय किया। जो म्युनिस्पेल्टिी के लिए कान्ग्रेस सदस्य चुने गये थे। उन्होंने निर्णय किया, यदि जवाहरलाल नेहरू को न खड़ा किया गया, तो उनकी हार हो जायेगी।

उस समय बहुत से मुख्य कान्ग्रेस नेता म्युनिस्पेल्टिी के उच्च पदों पर थे। चित्तरंजनदास कलकत्ता के पहिले मेयर बने। विठ्ठलभाई बम्बई कारपोरेशन के, वल्लभभाईपटेल अहमदाबाद म्युनिस्पेल्टिी के अध्यक्ष थे।

यू. पी. की कई म्युनिस्पेलिटियों के अध्यक्ष कान्ग्रेस के नेता थे। म्युनिस्पेल्टिी के शासन कार्य में जवाहरलाल ने बड़ी दिलचस्पी दिखाई। उन्होंने खूब काम किया, कई सुधारों के वे सपने भी देखने लगे। परन्तु उन सपनों को कार्यरूप देने के लिए म्युनिस्पेल्टिी में आवश्यक परिस्थितियाँ न थीं। बड़े सुधारों के लिए सरकार प्रोत्साहन नहीं देती। सबसे मुख्य विभाग वित्तविभाग सरकार के हाथ में था। फिर भी जितना कुछ सम्भव था, उतना

जवाहरलाल जी ने म्युनिस्पेलिटी के लिए किया।

इस कार्य के साथ कान्ग्रेस का कार्य भी बढ़ गया था। वे प्रान्तीय कान्ग्रेस के ही मन्त्री न थे, बल्कि अखिल भारतीय कान्ग्रेस के भी मन्त्री थे। रोज पन्द्रह घंटे काम किया करते। थक थकाकर घर पहुँचा करते। कोई सन्देह नहीं कि जवाहरलाल ने बड़ी कार्यकुशलता से काम किया। इस बारे में आवश्यक सामग्री रिकोर्ड में लिखित है। उनके एक राजनैतिक विरोधी ने कहा था—"नेहरू का सोशलिजम छोड़िये। चेयरमेन के तौर पर जो उन्होंने काम किया, वह सचमुच वर्णनातीत है।"

नई शासन सभायें केन्द्र में और प्रान्तों में बनीं। सरकार का उड़ेला हुआ नशा खूब फैला। कई लोग, जो सरकार का विरोध करते आये थे पदों के लिए लड़े और सरकार का साथ देने लगे।

अलहाबाद हाई कोर्ट के मुख्य जज श्रीमवुड़मियर्स का जवाहर से परिचय हुआ। उसका आना जाना शुरु होने के बाद जवाहर को वकालत छोड़ते छोड़ते एक साल हो गया। वह किसी न किसी बहाने आता रहा। आखिर उसने अपने आने का भेद खोला। उसने कहा कि जवाहर को, विद्यामन्त्री का पद यदि उन्होंने चाहा, तो दिया जा सकता था।

उन दिनों मन्त्री के पद शायद आसानी से मिल जाते थे। उस समय यू. पी. सरकार ने एक बड़े आदमी को मन्त्री का पद देना चाहा। पर उस आदमी ने कहला भेजा कि वह खास अक़्लमन्द न था। फिर भी सब कहते हैं कि मैं थोड़ा बहुत अक़्लमन्द हूँ, उस हालत

में मन्त्री का पद स्वीकार करके, क्यों सब से यूँ मूर्ख कहलाया जाऊँ?

एक समय कान्ग्रेस के आन्दोलन का मुकाबला करने के लिए सरकार ने उदारदलवालों को मन्त्री बनाकर, उनके प्रति आदर दिखाया था। पर जब कान्ग्रेस का आन्दोलन समाप्त हो गया, तो अंग्रेजों को उदारदल की मदद की कोई आवश्यकता न थी।

उनके जाने के बाद सरकार को नये मन्त्री नहीं मिले। कोन्सिलों के सदस्यों में उदारवादी थे। उनमें जमीन्दार वगैरह ही अधिक थे। परन्तु पढ़े लिखे कम ही थे और कान्ग्रेस ने कोन्सिलों का बहिष्कार कर रखा था।

जवाहर को सबसे बड़ा कष्ट था— कान्ग्रेस के आन्दोलन का रुक जाना। वे न सोच पाते थे कि कान्ग्रेस का भविष्य और देश का भविष्य क्या होगा।

गान्धी जी देश की इच्छाओं के प्रतिबिम्ब थे और वे भी देशवासियों की इच्छा की तरह अस्पष्ट थे। कोई स्पष्ट उद्देश्य न था। सिवाय इसके कि स्वतन्त्रता प्राप्त करनी है, कोई आर्थिक या राजनैतिक योजना सामने न थी। "स्वराज्य" का अर्थ स्वशासन है, अथवा स्वतन्त्रता। भारत के स्वतन्त्र होने पर भी क्या किसान जमीन्दार द्वारा सताये जायेंगे? क्या मजदूर पूँजीपतियों द्वारा शोषित किये जायेंगे?

जवाहरलाल में सोशलिस्ट विचार धीमे धीमे पैदा होने लगे। १९२६ में जब तक वे यूरूप न गये, तब तक उन विचारों को ठीक आधार न मिल सका।

नवाबनन्दिनी

[५]

महाराज मानसिंह बहुत-से लोग बाग के साथ पुरी जगन्नाथ पहुँचा। समुद्र के किनारे उसके लिए एक मील लम्बा शिबिर बनाया गया।

महाराजा ने जगन्नाथ पुरी के लिए निकलने से पहिले पठानों को एक चिट्ठी में लिखा था कि जब वह उनके राज्य में से गुजर रहा हो, तो नवाब उसको आकर देखे और उसके लिए आवश्यक प्रबन्ध करे। परन्तु उसको देखने के लिए न सुलेमानखान आया, न उस्मानखान ही। नवाब के परिवार में किसी ने भी उसका स्वागत न किया। पठानों का यह व्यवहार मानसिंह के लिए असन्तोषजनक था।

मानसिंह की मुख्य रानी का लड़का जगतसिंह था। मानसिंह को उस पर बहुत आदर था, पर प्रेम उतना न था। कुछ कुछ वह उससे डरता भी था। जब वह देश विदेश में घूमता, तो वह उसके साथ न जाती। मानसिंह की और भी कई पत्नियाँ थीं। परन्तु सबसे अधिक जोधपुर की राजकुमारी ऊर्मिला को ही वह चाहता था। पूरी में, जो उसके साथ तीन पत्नियाँ आईं थीं, उनमें वह भी थी।

दामोदर मुखर्जी

आरती देखकर वह ऊर्मिला के तम्बू में आ गया। ऊर्मिला जो उस समय उसके भोजन का प्रबन्ध कर रही थी, एक बालिका को, लेकर, उससे मिलने आई। वह बालिका आसाधारण सुन्दरी थी।

"यह लड़की कौन है? साक्षात् लक्ष्मी मालूम होती है।" मानसिंह ने कहा।

"यह लड़की मेरी सहेली की लड़की है। माँ बेटी जगन्नाथ जी के दर्शन के लिए आयी थीं। आज दुपहर मुझे देखने चली आई। मेरी सहेली तो चली गई। मैंने कहा कि मैं इस लड़की को अपने पास कुछ दिन रखूँगी।" ऊर्मिला ने कहा।

"क्या इसका विवाह हो गया है?"

"हो तो गया है, पर इस बारे में आपसे एक बात कहनी है। बाद में बताऊँगी।"

"अच्छा, इस लड़की का नाम क्या है?"

"राजलक्ष्मी।"

"अच्छा, सचमुच यह राजलक्ष्मी है।"

उसके बाद राजलक्ष्मी ने महाराजा को हर तरह से सेवा करके, खुश कर दिया।

मानसिंह को पुरी आये हुए दस दिन हो गये। पर अभी उसके वहाँ से जाने

पुरी में महाराजा के लिए जिसने आवश्यक प्रबन्ध किये थे वह था रामचन्द्र देव। वह देव वंश का था। उड़ीसा में पठानों के शासन के पूर्व देव वंश के राजा ही वहाँ शासन करते थे। सन्धि के अनुसार ज्योंहि पुरी पठानों के हाथ से मुगलों के पास आ गयी, त्योंहि रामचन्द्र देव को वहाँ का शाशक नियुक्त कर दिया गया।

पुरी में मानसिंह ने एक सप्ताह ठहरने का निश्चय किया। दो दिन बीत गये। तीसरे दिन शाम को जगन्नाथालय में मंगल

के कोई लक्षण नहीं दिखाई दे रहे थे। इसके बाद, पठान नवाबों की कुछ बातें उसे मालूम हुईं। बीमार ईसाखान मर गया था। सुलेमानखान ने जो नाम मात्र के लिए नवाब था अपना राज्य भार उस्मानखान को छोड़ दिया था। उस्मानखान ने खिझरखान को नया वजीर नियुक्त किया था। खिझरखान हर तरह से उस्मानखान के अनुकूल था। वह साहसी और युद्ध प्रिय था। उसकी उम्र छियालीस वर्ष की थी। शासन उस्मानखान के नाम पर ही हो रहा था।

मानसिंह ने यह सब जानकर रामचन्द्र देव से सलाह मशवरा किया। उस्मानखान जल्दी ही सन्धि को रद्द कर देगा। उसका व्यवहार पहिले ही बहुत उद्धत-सा है। वह मानसिंह की पुरी में भी नहीं देखने आया। वह युद्ध पिपासी है। उसमें बादशाह के प्रति कोई आदर गौरव वगैरह भी नहीं है। मानसिंह ने पठानों से तब सन्धि की थी जब वह उनसे युद्ध करने के लिए तैयार न था। अब वह युद्ध के लिए तैयार था। परन्तु वह तब तक कुछ न करना चाहता था, जब तक पठान सन्धि के नियमों का उल्लंघन नहीं करते।

आखिर उस्मान पुरी नगर आया। जब महाराजा दुपहर के बाद मित्र राजाओं और रामचन्द्र के साथ सभा मण्डप में बैठा था, तब उस्मानखान वहाँ आया। मानसिंह ने उसका उचित आदर किया और उसको उचित आसन दिया।

उस्मान बड़ा खूबसूरत था। अच्छी पोषाक और पगड़ी उसने पहिन रखी थी। लम्बी तलवार लटक रही थी। महाराजा ने औपचारिक रूप से बूढ़े वजीर की मृत्यु के बारे में पूछताछ की। फिर कहा—"मैं उड़ीसा आया तो था, पर

मैने न सोचा था कि मुझे उड़ीसा के नवाब को देखने का सौभाग्य मिलेगा। सौभाग्य से आज हमें वह अवसर मिल गया है।" उसने परिहास किया।

उस्मान ने इस परिहास को समझकर कहा—"यदि हम आपके सचमुच आत्मीय होते तो, शायद हमारे दर्शन को सौभाग्य समझने का मौका भी होता। परन्तु हमें तो आपके आत्मीय होने का भाग्य नहीं है। यदि होता, तो हमें आप गुलामों की तरह न लिखते कि आकर हमारे दर्शन करो।" उसने यह बात लट्ठ मारकर मानों कही।

मानसिंह ने भी सब कुछ साफ़ साफ़ कह देने की ठानी—"कहाँ लिखा है कि आज्ञा पालन करनेवाले दास आत्मीय न हों! आत्मीय होना न होना उनके गुणों और शक्ति पर आश्रित है। नवाबों ने बादशाह के आधीन रहना स्वीकार कर लिया था। आत्मीय की तरह रहना चाहते हैं कि नहीं, यह उनको ही निर्णय करना होगा।"

जब मानसिंह ने साफ़ साफ़ कहा कि तुम हमारी आज्ञा पालन करनेवाले गुलाम हो, तो उस्मानखान का मुँह लाल लाल हो गया। उसने कुछ सब्र दिखाते हुए कहा—"बंगाल के सूबेदार और मैं आपसे बहस करने नहीं आये हैं। आप जैसों से बहस करना, हम लोगों की इज़्ज़त के खिलाफ़ है। आपसे बहुत-सी मुख्य बातें करनी हैं। परन्तु अभी आपका रवैय्या देख, उन्हें भी न छेड़ना ही अच्छा मालूम होता है। मैं जा रहा हूँ। पर जाने से पहिले मैं आपसे एक बात करना चाहता हूँ। यह मेरी निजी बात है।"

"आपका कहना सुनने में मुझे कोई एतराज नहीं है। मैं आपसे दुश्मनी नहीं

रखना चाहता। मैं फिर फिर कहूँगा कि मेरा स्नेह खोना आपके लिए अच्छा नहीं है।" मानसिंह ने कहा।

"मैं इस विषय पर आपसे कोई बात नहीं करना चाहता। आपने अपने लड़के जगतसिंह को आजीवन कैद कर रखा है। क्या उसको इसीलिए यह सजा दी गई है, क्योंकि आपको उसके और नवाबनन्दिनी अयाशा के प्रेम के बारे में पता लग गया था। जगतसिंह और अयाशा का प्रेम सचमुच अपराध है। परन्तु उसकी सजा के और भी कारण हैं, वह अविनीत है। उसने आज्ञा का उलंघन किया है। लापरवाही दिखाई है। शत्रुओं से उसने स्नेह सम्बन्ध बनाये थे। ये सब अपराध हैं।"

"जगतसिंह मेरा शत्रु है, मैं उसका हित नहीं चाहता। परन्तु यदि वह एक ऐसे अपराध के लिए सजा भुगते, जो उसने नहीं किया है, यह मुझे गँवारा नहीं है। अयाशा के प्रेम के बारे में उसका कोई अपराध नहीं है। उसने किसी को भी नहीं बताया था कि वह अयाशा को चाहता था। अयाशा ने स्वयं उससे प्रेम किया था। यह जानकर भी उसने उससे प्रेम न किया था। यह बताना मेरा धर्म है।"

"यदि यह सच है, तो तुम में और जगतसिंह में क्यों द्वन्द्व युद्ध हुआ?"

उस्मानखान ने कुछ शर्माते हुए कहा—"क्या यह खबर आप तक भी पहुँच गई है? तो सुनिये बताता हूँ। मैंने अयाशा से प्रेम किया है। परन्तु चूँकि उसके सारे मन में जगतसिंह ही समाया हुआ है और उसमें मेरे लिए जगह नहीं है। जब तक जगतसिंह जीवित है, वह

उसे न भूलेगी। इसलिए ही मैंने उसे मारने की कोशिश की। परन्तु मैं हार गया। मैं उसको मारने की इन्तजार कर रहा हूँ। परन्तु उसको आजीवन सजा हो जाने से मैं यह नहीं कर पा रहा हूँ।" कहता, उस्मानखान अपने आसन से उठा और सलाम करके चला गया।

"मुगलों और पठानों की सन्धि अधिक दिन नहीं चलेगी।" सभा में बैठे और लोगों ने सोचा। मानसिंह कुछ चिन्तित हुआ। फिर वह जगन्नाथ स्वामी की आरती के लिए चला गया।

उस्मानखान स्वर्णदुर्ग को वापिस चला गया। पर उसके भेदिये मानसिंह के बारे में लगातार खबरें भेजते जाते थे। उस्मान जल्दी से जल्द सन्धि रद्द करना चाहता था। वह सन्धि उसको बड़ी अपमानजनक-सी लग रही थी। वह युद्ध की तैयारियाँ करने लगा।

एक बार उस्मानखान अपने महल में अकेला बैठा था कि नवाबनन्दिनी अयाशा ने पास के अन्तःपुर के द्वार खोलकर कहा—"नवाब अकेले ही मालूम होते हैं। क्या मैं थोड़ी देर के लिए आ सकती हूँ?"

"क्यों पूछ रही हो अयाशा? क्या मैं आ सकती हूँ कि नहीं? खबर भेजती, तो मैं ही चला आता। तुम ही क्यों चली आई? क्या बात है?" उस्मानखान ने पूछा।

अयाशा के मुँह पर चिन्ता थी। वह उसके कमरे में आकर बैठ गई। उस्मान ने कमरा बन्द करके कहा—"कहो"

"तुमसे एक बात कहना चाहती हूँ। तुम यह याद रखो कि मैं तुम से प्रेम नहीं करती हूँ, इधर उधर के भ्रम में न रहो।" अयाशा ने कहा।

"तुम्हारी बातें सुनने में मुझे बड़ा आनन्द आता है।" उस्मान ने कहा।

उसने कुछ देर बाद कहा—"अब तुम युद्ध की तैयारी में हो। इधर उधर की बातों से तुम्हें तंग करना अब अच्छा नहीं है।"

"चाहे तुम कैसी भी बातें करो, मुझे कोई एतराज नहीं है। अगर न कहोगी, तो मैं बुरा मानूँगा।"

"सचमुच जो कृपा तुम मुझ पर करते हो, उसकी कोई सीमा नहीं है। मैं इसके बदले कुछ भी तो नहीं कर पा रही हूँ।"

"अयाशा, मैं नहीं जानता कि मैंने तुम पर क्या कृपा की है! यही मेरे लिए भाग्य की बात है कि तुम मुझे अपना श्रेयोभिलाषी समझती हो।"

अयाशा ने सिर झुकाकर कहा—"मुझे ऐसा लग रहा है कि मुझे यहाँ नहीं रहना चाहिए।"

उस्मानखान को ऐसा लगा, जैसे उसको कोई चोट लगी हो। उसने कहा—"अयाशा, क्या यह कहने के लिए ही आयी हो! तुम यहाँ नहीं रहोगी, तो कौन रहेगा! चूँकि तुम यहाँ हो इसलिए ही मैं जिन्दा हूँ। तुम्हारा मेरा न होना, मेरी बुरी किस्मत है। पर मुझ में अभी आशा नहीं गई है। मैं इसी आशा में हूँ कि जिन्दा रहूँगा, तो कभी न कभी तुम मुझ पर मेहरबानी करोगी ही। क्या अब उस आशा को भी छोड़ दूँ?"

"उस्मान तुम्हारा हृदय बड़ा अच्छा है। तुम्हारा प्रेम असाधारण है। पर इससे तुम्हें सिवाय तकलीफ के कुछ न मिलेगी। मुझ जैसी पत्थर से प्रेम करके तुम्हारे दुखी होने की अपेक्षा, तो यही अच्छा है कि मैं यहाँ से चली जाऊँ।

"अयाशा यह न सोचो कि मुझे तुम से आनन्द नहीं मिल रहा है। दूर से तुम्हें देखकर, तुम्हारी आवाज सुनकर, मैं बड़ा आनन्दित होता हूँ। क्या मुझे यह आनन्द भी नहीं लेने दोगे?"

"यदि मैं दूर रही, तो तुम मुझे भूल जाओगे।"

"जिससे तुम प्रेम कर रही हो, वह तुमसे बहुत दूर है, क्या तुम उसे भूल गई हो?"

"पुरुषों का रास्ता कुछ और है। उन्हें कितने ही काम रहते हैं। स्त्री के लिए सिवाय प्रेम के जिन्दगी में कुछ नहीं है। तुम पत्थर की इस प्रतिमा को आसानी से भूल सकते हो।"

"जब मेरा शरीर मिट्टी में मिल जायेगा, तब शायद मैं भूलूँ तब तक यह असम्भव है। तुम जिससे प्रेम कर रही हो, मैं सोच रहा हूँ, कभी न कभी मैं उसको मार ही दूँगा। अगर तब भी तुमने प्रेम न किया, कम से कम यह तो तसल्ली रहेगी कि मेरा प्रतिद्वन्दी मारा गया है।"

"उस्मान, मैं शायद दुश्मनी और बुराई बढ़ाने के लिए ही जीवित हूँ। मैं यही चाहती हूँ कि तुम सुखी रहो। मैं शायद तुम्हें फिर न दिखाई दूँ। यदि तुम पर कोई आपत्ति आई और यदि मैं उस आपत्ति का निवारण कर सकी, तो मैं तुम्हारे पास आऊँगी।" अयाशा ने कहा।

उस्मान ने, जो तब तक सिर नीचा किये यह सुन रहा था, सिर उठाकर जो देखा तो अयाशा वहाँ न थी।

[अभी और है]

तीन भिक्षु

एक गाँव में तीन भाई थे। माँ बाप के गुज़र जाने के बाद, वे बेसहारे-से हो गये थे। इसलिए उन्होंने कहीं जाकर कुछ काम धाम करने की सोची। दोनों बड़े भाइयों ने छोटे भाई को अपने साथ न आने दिया। वे अपना बोरिया बिस्तर लेकर राजा के पास पहुँचे। जब वे वहाँ गये, तो तीसरा भाई नाग भी वहाँ जा पहुँचा।

राजा ने उनकी बात सुनकर कहा—"अभी तो तुम्हें देने के लिए कोई काम नहीं है। चूँकि तुम बुरी हालत में हो, इसलिए रसोई घर में ईन्धन, पानी वगैरह पहुँचाने का काम करो।" वे खुशी खुशी यह काम करने को मान गये।

कुछ दिनों बाद राजा ने दोनों बड़े भाइयों को बुलाकर कहा—"तुम दोनों की अपेक्षा नाग दुगना पानी लाता है। दुगना ईन्धन लाता है। तुम क्यों इतने आलसी हो?"

राजा की पत्नी कुछ दिन पहिले ही गुज़री थी। उसने दुबारा शादी नहीं की थी। यह बात दोनों बड़े भाई जानते थे। उन्होंने नाग से पिंड छुड़ाने के लिए राजा से कहा—"हमारा नाग शुरु से ही बड़ा लायक है। यदि आपने उसे भेजा तो एक सप्ताह में, आपके लिए सुन्दर से सुन्दर स्त्री को, पत्नी बनाकर ला सकता है।"

राजा की भी सुंन्दर स्त्री से शादी करने की मरजी हुई। उसने नाग को बुलाकर कहा—"अरे भाई, हम तुम्हारा शक्ति सामर्थ्य नहीं जानते थे। इसलिए ही तुम

से ईन्धन वगैरह मँगवाया, अब तुम वह काम छोड़ दो और मुझ से विवाह करने के लिए एक सुन्दर लड़की को ढूँढ़ो। तुम्हें सप्ताह भर का समय देता हूँ।"

"क्या इतना बड़ा काम मुझसे हो सकेगा महाराज? मैंने कभी नहीं बताया था कि मुझ में शक्ति है।" नाग ने डरते डरते हुए कहा।

"यदि सप्ताह भर में तुम सुन्दर लड़की को न लाये, तो तुम्हारा सिर ही कटवाकर, किले के फाटक पर लटकवा दूँगा।" राजा ने नाग को डराया।

नाग को आखिर लड़की ढूँढ़ने निकलना पड़ा। राजा की रसोइयन ने नाग को, खाने पीने की चीज़ें बाँधकर दीं। जब वह जंगल के रास्ते कुछ दूर गया, तो उसको भूख लगी.। इसलिए उसने एक पेड़ के नीचे खाने की पोटली खोली।

इतने में एक बुढ़िया उसके पास आई। "इस पोटली में क्या है बेटा?" उसने पूछा।

"भोजन! आओ, तो तुम भी कुछ खाओ।" नाग ने कहा।

दोनों के पेट भर खाने के बाद, बुढ़िया ने कहा—"बेटा, मैं तुम्हारा ऋण नहीं रखूँगी। किस काम पर जा रहे हो? कहाँ तक जा रहे हो?"

नाग ने अपने काम, और राजा की धमकी के बारे में बताया।

"यदि तुम लोकैक सुन्दरी ही चाहते हो, तो इस दिशा में जाओ। मायावियों का किला आयेगा। वहाँ लोकैक सुन्दरियाँ होंगी। यदि तुमने यह शंख बजाया, तो मायावी तुम्हारा कुछ न बिगाड़ेंगे। वे जैसा तुम कहोगे, वैसा करेंगे भी।"

बुढ़िया ने नाग को एक शंख दिया और अपने रास्ते चली गई।

बहुत कोशिश करने के बाद नाग वह शंख बजाना सीख गया, उसके बजते ही, उसके चारों ओर मायावी जमा हो गये। "क्या चाहिये हुज़ूर! क्या हुकम है?" उन्होंने पूछा।

"क्या मुझे एक लोकैक सुन्दरी ला दोगे?" नाग ने पूछा। यद्यपि मन ही मन उनको देखकर वह डर रहा था।

"लोकैक सुन्दरियों को छूने का अधिकार तो हमें नहीं है, पर जहाँ वे रहती हैं, वहाँ हम तुम्हें पहुँचा देंगे।" कहकर मायावी नाग को उठाकर एक किले के पास ले गये।

किला सुनसान था। नाग जब अन्दर गया, तो उसको वहाँ तीन राजकुमारियाँ दिखाई दीं। नाग को देखते ही वे इधर उधर भागीं, फिर कहीं अदृश्य हो गईं। नाग ने सारा क़िला खोजा, पर उनका पता उसे कहीं न लगा। यदि वे यूँ न भाग जातीं, तो उनमें से किसी एक को मनाकर, राजा को दे आता और अपना सिर बचा लेता। अब उसे खाली हाथ

जाना होगा, और राजा उसका अवश्य सिर कटवा देगा। नाग अभी यह सोच ही रहा था कि उसको वहाँ एक आले में तीन निम्बू दिखाई दिये। यह सोचकर कि रास्ते में अगर प्यास लगी, तो वह उनका रस पी सकेगा, उसने उन्हें अपने थैले में डाल लिया और घर की ओर निकल पड़ा।

कुछ दूर जाने के बाद, नाग को बड़ी प्यास लगी। कड़ी धूप पड़ रही थी। वहाँ कहीं आसपास पानी नहीं था। इसलिए उसने थैले में से एक निम्बू निकालकर उसे काटा। उसमें एक अत्यन्त सुन्दरी का सिर दिखाई दिया और वह कह रही थी—"प्यास, मरी जा रही हूँ।"

इस सुन्दरी की जैसे भी हो मैंने रक्षा कर दी और उसको राजा को सौंप दिया, तो मैं मौत से बच जाऊँगा—यह सोचकर नाग ने इधर उधर पानी खोजा। कहीं भी एक बूँद पानी न मिला। जब वह हाँफता हाँफता वापिस आया, तो निम्बू की सुन्दरी मर गई थी। नाग बड़ा दुःखी हो आगे चलने लगा। कुछ दूर जाने के बाद, उसे फिर बड़े ज़ोर से प्यास लगी।

उसने थैले में से एक और निम्बू निकालकर काटा। उसमें एक और सुन्दरी का सिर दिखाई दिया। उसने भी कहा—"पानी, मरी जा रही हूँ।" नाग, फिर पानी के लिए इधर उधर दौड़ा। परन्तु उसे कहीं पानी न मिला। इस निम्बू की सुन्दरी ने भी प्राण छोड़ दिये।

नाग को अब एक और आशा हुई। तीसरे निम्बू में भी एक और सुन्दरी होगी। यदि उस निम्बू को वह राजमहल ले गया, तो एक सुन्दरी सुरक्षित पहुँच जायेगी और उसका सिर भी बच जायेगा। मूर्खता से उसने दो निम्बुओं को काटकर, दो सुन्दरियों

का मार दिया था। इस बार ऐसी गल्ती नहीं करूँगा।

पर राजमहल जाने से पहिले नाग की जीभ प्यास के कारण लटक-सी गई। यदि उसने निम्बू को काटकर न पिया, तो उसे लगा कि वह मर जायेगा। वह दान्त पीस कर जल्दी जल्दी चला। राजा की बावड़ी पास ही थी कि उसकी प्यास और भी बढ़ गई। उसने तीसरा निम्बू काटा। उसमें उसको सबसे अधिक सुन्दर स्त्री दिखाई दी। उसने भी कहा—"प्यास, मरी जा रही हूँ।"

तुरत नाग निम्बू लेकर, ज़ोर से बावड़ी की ओर भागा। वहाँ जाकर, उसने सुन्दरी को पानी पिलाया और खुद भी पिया। बावड़ी का पानी पीते ही, वह लोकैक सुन्दरी मामूली स्त्रियों की तरह बड़ी हो गई।

"ओह, ज़िन्दगी बची, तुम इस पेड़ पर चढ़कर, पत्तों के पीछे छुप जाओ। मैं जाकर राजा को बुलाकर लाता हूँ।" कहकर राजमहल गया।

इतने में रसोइयन पानी लेने बावड़ी आयी। वह उसमें मटका डुबोने को ही थी कि पानी में लोकैक सुन्दरी की परिछाई

देखकर चिल्लायी—"अरे, तो मैं क्या इतनी सुन्दर हूँ ! तो भला मैं क्यों रसोई का काम करूँ !" तुरत उसने मटका वहीं पटका और जब पीछे मुड़कर देखा, तो टहनियों के बीच लोकैक सुन्दरी दिखाई दी।

रसोइयन उसको देखते ही उबल पड़ी। उसने लोकैक सुन्दरी को नीचे घसीटा। उसके कपड़े स्वयं पहिन लिये। उसको बावड़ी में धकेल दिया और स्वयं टहनी पर चढ़कर बैठ गई।

थोड़ी देर बाद, राजा जब अपने नौकरों के साथ आया, तो उसने स्त्री को उतरवाकर जो देखा, उसका लोकैक सुन्दरी होना तो अलग, वह साधारण सुन्दरी भी न थी। उसे गुस्सा आ गया। उसने नाग और रसोइयन को जेल में डलवा दिया।

इसके गुज़रने के अगले दिन नौकरों को बावड़ी में एक सफेद मछली दिखाई दी। जब उसे पाकशाला की दासियों ने काटा, तो उसमें से एक सुन्दर स्त्री निकली और उनके देखते देखते वह मामूली स्त्री बन गई।

दासियों ने जाकर, यह बात राजा से कही। राजा भागा भागा आया, लोकैक सुन्दरी को देखकर उसे बड़ा आश्चर्य और आनन्द हुआ। उससे, जो कुछ हुआ था, उसने वह मालूम कर लिया। उसने नाग को तुरत रिहा कर दिया और उसे अपना अंगरक्षक बना लिया। लोकैक सुन्दरी से उसने वैभव के साथ विवाह कर लिया। रसोइयन ने अपना अपराध स्वीकार कर लिया। उसे देश निकाला दे दिया गया और नाग के दोनों भाई तब भी रसोई में पानी और ईन्धन पहुँचा रहे थे।

बूढ़ा भिखारी

जिस देश में पन्नालाल रहा करता था। वहाँ युद्ध की परिस्थितियाँ पैदा हो गईं। पास के देश राजा ने उस देश के कुछ भाग की माँग की। फिर झगड़ा इतना बढ़ा कि उस देश ने, पन्नालाल के देश पर आक्रमण किया। उसकी सेनाओं ने कुछ ग्राम और नगरों पर कब्जा कर लिया। अन्त में वे किले के पास आकर खड़ी हो गईं। किले को उन्होंने महीनों घेरे रहा। पर वे उसे न जीत सके।

युद्ध के कारण, देश के प्रति ग्राम में, अलग अलग कर लगाये गये। ग्रामाधिकारी उनको ज़मा करता। इन करों को इकट्ठा करने में पन्नालाल ने ग्रामाधिकारी की बड़ी मदद की। ग्रामाधिकारी ने देश के कोश के लिए कुछ पैसा ज़मा किया। सेना में भरती होने के लिए कुछ युवकों को भी ज़मा किया। पन्नालाल पैसा और युवकों को लेकर, राजधानी पहुँचा।

वहाँ काम पूरा करके, पन्नालाल वापिस आ रहा था। अन्धेरा होने के समय एक ग्राम की चौपाल में पहुँचा। वहाँ, उसे बहुत-से भिखारी दिखाई दिये। जब पन्नालाल ने पूछा कि वहाँ वे क्यों ज़मा हुए थे, तो पता लगा कि राजा की आज्ञा थी कि भिखारियों और अवारा लोगों को पकड़कर, राजधानी भेजा जाय। पता लगा था कि शत्रु भेदिये भेस बदलकर, देश में घूम फिर रहे थे। ये भिखारी सब उस प्रान्त में पकड़े गये थे।

भिखारियों में से कुछ पन्नालाल को देख पहिचान कर, बड़े खुश हुए।

"पन्नालालजी, हमें निष्कारण सिपाही पकड़ कर ले जा रहे हैं। हमें छुड़वाइये।"

"इसमें तुम्हारा नुक्सान ही क्या हुआ है? राजा की आज्ञा का पालन होने दो। तुम्हें खाना तो मिल ही जायेगा। युद्ध के खतम होने तक ज़रा सब्र करो। उसके बाद, जहाँ तुम चाहो, वहाँ घूम सकोगे।" पन्नालाल ने उन भिखारियों से कहा।

भिखारियों में से एक वृद्ध ने, जिसने साथ के भिखारियों से पन्नालाल के बारे में जान लिया था, उसे पास आने का ईशारा किया। "हुज़ूर, आप हमारा एक उपकार कीजिये। इस गाँव के बाहर एक काली का मन्दिर है। वह मेरा काना लड़का है, जिसका नाम वेन्कट है। आप उससे कहिये कि मैं यूँ पकड़ा गया हूँ। आप यह पोटली उसे दे दीजिये। इस पोटली में, मैंने एक नया मन्त्र लिखा है। यदि आपने उसे दे दिया, तो मेरा काम हो जायेगा। यह सहायता मेरे लिये कोई और नहीं कर सकेगा।"

"यदि तुमने वह पोटली दी तो, मैं उसे तुम्हारे लड़के के पास पहुँचा दूँगा।" पन्नालाल ने कहा। भिखारी ने उस अन्धेरे में पन्नालाल के हाथ में एक पोटली दी। वह पुराने कपड़े में बंधी थी। कपड़ा बड़ा पतला था और सारी पोटली हाथ-भर में आ जाती थी।

अगले दिन पन्नालाल खोजता खोजता, काली के मन्दिर में गया। वहाँ उसने एक युवक को देखा। वह काना था। पन्नालाल ने उसे देखकर पूछा—"क्या तुम्हारा नाम ही वेन्कट है?" जब उसने हाँ कहा, तो उसने कहा—"तुम्हारे पिता ने तुम्हें यह दिया है।" पोटली उसने उसके हाथ में रख दी। "अधिकारी तुम्हारे पिता को

ले गये हैं।" कहकर, वह देवी का दर्शन करने अन्दर गया।

उस मन्दिर में चार लोग थे। एक पुरोहित, दूसरा मन्दिर का नौकर, तीसरा वेन्कट, चौथा वेन्कट का साथी। वेन्कट ने जब पोटली खोली और साथी के लाये हुए चीथड़े को जब पानी में भिगोया, तो किसी गुप्त लिपि में, कुछ लिखा हुआ मालूम हुआ। उसमें कुछ लकीरें थीं। इसके अलावा कुछ लिखा भी हुआ था। "यह लानेवाला परोपकारी पन्नालाल है। राजा का स्नेहपात्र है। इसे कैद कर लेना।"

पन्नालाल जब मन्दिर से जा रहा था, तो काने वेन्कट ने उसके पास आकर कहा—"पन्नालाल जी, आपको हमारा आतिथ्य स्वीकार करना होगा। आपने अमूल्य समाचार लाकर दिया है, इसलिए हमारे राजा आपको बड़ा ईनाम देंगे। आज रात ही हम निकलेंगे।" वह यह कह ही रहा था कि उसके दोस्त ने आकर, पन्नालाल के हाथ पकड़ लिये।

"अरे, यह भी क्या धाँधली है ? तुम कौन हो, तुम उस भिखारी के लड़के हो कि नहीं ?" पन्नालाल कह रहा था कि मन्दिर का नौकर एक बड़ी रस्सी ले आया। "यह सब एक नाटक है। आपने हमारा उपकार किया है। पर हमें आपको बाँधना ही होगा। आपके छुड़ाने के लिए देखें आपका राजा सारा राज्य देता है, या आधा राज्य।" काने ने कहा।
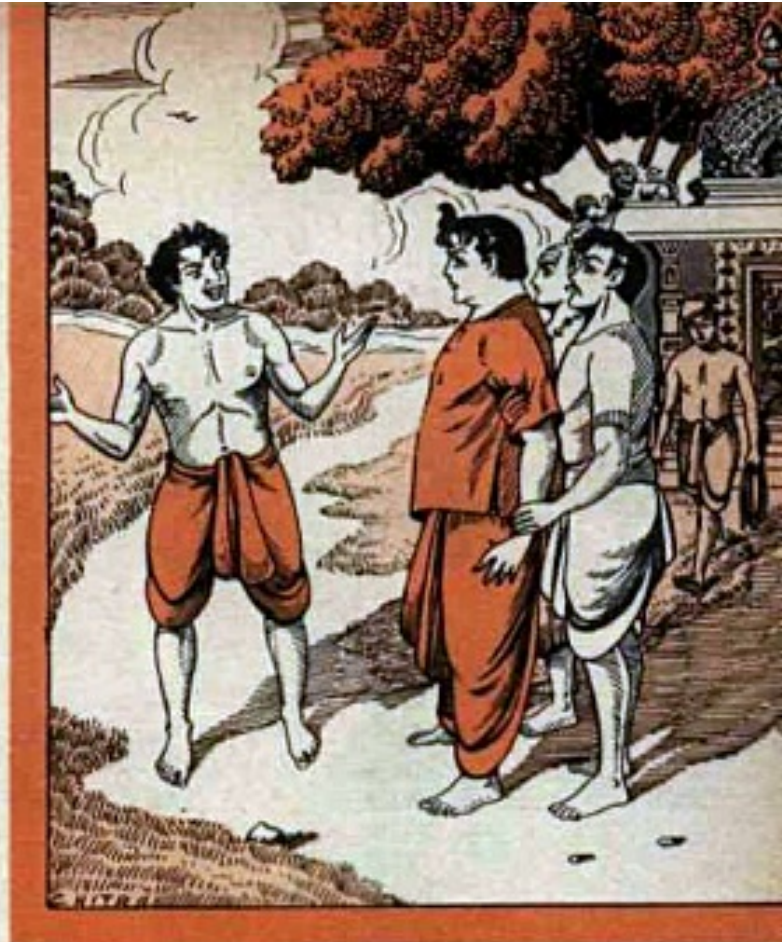
"तो यह बात है। तुम बड़ी गल्ती कर रहे हो। तुम मुझे जितना बड़ा समझ रहे हो, मैं उतना बड़ा हूँ नहीं। यदि तुमने मुझे मार भी दिया, तो भी हमारे राजा इसकी परवाह नहीं करेंगे। जैसे युद्ध में लोग मर रहे हैं, मैं भी वैसे ही

मर जाऊँगा। चाहो तो तुम मुझे मार दो। पर उससे सिवाय पाप के तुमको कुछ नहीं मिलेगा।" पन्नालाल ने कहा।

उन्होंने उसके हाथ बाँध दिये और उसको एक कमरे में धकेल दिया और दरवाज़े बन्द कर दिये। वह सुनसान जगह थी। पन्नालाल जानता था, अगर वह चिल्लाता भी, तो कोई उसकी न सुनता। मन्दिर में जितने लोग थे, वे सब शत्रु और शत्रु के आदमी थे। बूढ़ा भिखारी भी भेदिया था। उसने राजधानी के गुप्तमार्गों का चित्र बनाकर अपने लड़के को दिया था। बूढ़ा तो पकड़ा गया, पर उसका काना लड़का अभी स्वतन्त्र था। वह शत्रुओं को रहस्य पहुँचा रहा था।

पन्नालाल चूँकि असाधारण बलवान था, इसलिए उसने रस्सियाँ खोल लीं, जो कुछ होना था, उसकी इन्तज़ार में बैठा रहा। उस दिन रात को काना, योद्धा के वेष में अपने साथी के साथ आया। उसने कमरे का दरवाज़ा खुलवाया। पन्नालाल को बाहर आने के लिए कहा—"अब हम अपने राजा के पास जा रहे हैं। यदि तुमने रास्ते में इधर उधर का कुछ काम किया, तो हमारी तलवारें मजा चखा देंगी। क्या तुम उनका मजा जानते हो?"

"नहीं, तो, मैं नहीं जानता, तुम्हारे हाथ में तलवारों का होना ही गलती है।" कहते हुए पन्नालाल ने काने के हाथ पर जोर से मारा। उस चोट के कारण, उसके हाथ की तलवार नीचे गिर गई और हाथ में बड़े जोर से दर्द हुआ। यह देख उसके साथी ने पन्नालाल पर तलवार उठायी। पन्नालाल ने उसके हाथ पर भी जोर से मारा और उसके हाथ की तलवार भी नीचे गिरा दी। फिर उसने दोनों तलवारें दूर फेंक दीं।

इतने में पुरोहित और नौकर बड़ी बड़ी मजबूत रस्सी लाये। पन्नालाल ने काने और उसके साथी को बुरी तरह मारा और फिर पुरोहित जो रस्सी लाया था, उससे उन्हें बाँध दिया। फिर उसने पुरोहित और मन्दिर के नौकर को भी बाँध दिया और चारों को कमरे में डालकर दरवाज़े बन्द कर दिये। फिर वह ग्रामाधिकारी का घर ढूँढ़ता ढूँढ़ता उसके पास गया। उसने उससे कहा कि उसने कुछ भेदिये देखे हैं और उनको पकड़कर लाने के लिए सिपाहियों की ज़रूरत है।

सिपाहियों ने आकर चारों को पकड़ लिया। बूढ़े भिखारी ने जो सन्देश और वस्तुवें भेजी थीं, उनको भी पकड़ लिया। पन्नालाल उनके साथ राजधानी गया और जो कुछ गुज़रा था उसने राजा को सुनाया।

राजा ने कैदी भिखारियों में से, बूढ़े भिखारी को खोज निकाला। पूछ ताछ करने पर मालूम हुआ कि वह शत्रु राजा का चाचा था और काना उसका लड़का ही था। फिर राजा ने शत्रु राजा के पास खबर भेजी। "आपका चाचा और उसका लड़का अब हमारे कैदी हैं। आपकी सेनायें तुरत हमारे देश से चली जानी चाहिए। युद्ध की हानि के लिए हमें लाख वराह दीजिये। नहीं तो आपके चाचा और उसके लड़के का सिर काटकर आपसे युद्ध करते रहेंगे।"

अपने लोगों को छुड़ाने के लिए शत्रु राजा इन सब शर्तों को मान गया। देश में युद्ध का भय जाता रहा और योद्धाओं के साथ राजा ने पन्नालाल का भी खूब सम्मान किया।

सफ़ेद खरगोश

जापान देश से कुछ दूरी पर खरगोशों का द्वीप था, वहाँ अनगिनित खरगोश थे। वहाँ उनको सब सुविधायें मिली हुई थीं। कहीं कोई खतरा न था। उनमें स्वच्छ सफ़ेद खरगोश एक ही था।

वह सफ़ेद खरगोश समुद्र के उत्तरी किनारे पर लेटकर, लगातार जापान की तट की ओर देखता रहता। जापान का तट क्षितिज में एक पतली लकीर की तरह दिखाई देता। फिर भी खरगोश वहाँ जाना चाहता और वहाँ के सब आश्चर्य देखना चाहता। जब उसके बन्धु खरगोश पूछते—"क्यों, यहाँ रेत पर लेटे, हमेशा समुद्र की ओर देखते हो?" तो वह कहा करता—"वह जो दिखाई दे रहा है, वह असली देश है। वहाँ बहुत-से आश्चर्य हैं। एक बार जाकर, उन आश्चर्यों को देखना चाहता हूँ।"

"क्या तुम्हारी अक्ल मारी गई है?" हमारे लिए भगवान ने यह द्वीप बनाकर दिया है। जो सुख हमें यहाँ मिलते हैं, वे और कहीं नहीं मिलेंगे। यह हमारी भूमि है। इसको छोड़कर जाने के बारे में सोचना ही बड़ा पाप है।" बाकी खरगोशों ने सफ़ेद खरगोश को समझाया। परन्तु उसने न सुनी।

खरगोश में यदि यह इच्छा पैदा हुई थी, तो इसका कारण मगर था। वह कभी कभी जापान के तट से उस द्वीप में आकर, रेत में टहला करता। सफ़ेद खरगोश की उससे अच्छी दोस्ती हो गई। उसने बताया कि जापान के किनारे पर रेत

गन्दी है, वह मनुष्य नाम के प्राणी हैं। वे खड़े होकर नीचे के पैरों से चलते हैं और ऊपर के पैरों से काम करते हैं। उनका एक सम्राट है। उसके एक लड़की है। उसके बाल अमावस की तरह हैं और शरीर का रंग पूर्णिमा की तरह—जब मगर यूँ गप्पें सुनाता, तो सफ़ेद खरगोश की वहाँ जाकर यह सब स्वयं देखने की इच्छा और भी प्रबल हो उठती।

एक बार मगर ने खरगोश से कहा कि सम्राट की लड़की से विवाह करने बड़े-बड़े युवक आ रहे थे और उसने उन सबसे विवाह करने से इनकार कर दिया था। एक और दिन मगर एक और खबर लाया कि दूर कहीं से पाँच राजकुमार सम्राट की लड़की से विवाह करने आ रहे थे। अफवाह है कि सम्राट की लड़की, उनमें से किसी एक से शादी कर लेगी।

सफ़ेद खरगोश की जापान जाने की इच्छा और सम्राट की लड़की को देखने की इच्छा और भी जबर्दस्त हो गई। उसने अपने दोस्त मगर से कहा—"भाई, इस संसार में सिवाय तुम्हारे मेरी मदद करनेवाले कोई नहीं है। यदि तुम मुझे

अपनी पीठ पर सवार करके, उस पार ले गये, तो ज़िन्दगी-भर तुम्हारा एहसान मानूँगा।"

"यदि मैंने यह काम किया, तो तुम्हारे सारे बन्धु मेरे दुश्मन हो जायेंगे। तब मैं तुम्हारे द्वीप में आकर, इस मुलायम सफ़ेद रेत पर आराम से नहीं लेट सकूँगा।" मगर ने पहिले तो यह कहकर आनाकानी की पर सफ़ेद खरगोश को जिद करता देख, आखिर वह मान गया। वह उसे अपनी पीठ पर सवार करके, जापान देश ले गया। वहाँ तट पर पत्थर और मिट्टी थी।

जब खरगोश समुद्र तट से कुछ दूर गया, तो एक कुत्ता उसके पीछे पड़ गया। उसे उसने काटा। वह खरगोश, जो कभी मौत से नहीं डरता था, मौत से डरने लगा। वह दर्द से कराहता कराहता एक खारे नाले के पास आया, उस पर एक पुल था। वह उस पुल के नीचे बैठकर, पछताने लगा कि वह अपना देश छोड़कर क्यों चला आया था, सभी कुछ नया था। आपत्ति किस रूप में कहाँ, कैसे आती है, कुछ नहीं मालूम। सम्राट की लड़की को देखने की भी कोई आशा नहीं रह गई थी। अपने दोस्त मगर की पीठ पर सवार होकर, वापिस अपने द्वीप चले जाना भी कोई खास आसान न था। कुत्ते ने जब काटा, तो खरगोश अन्धाधुन्ध ज़ोर से भागने लगा।

कुछ दर बाद, पुल पर घोड़ों की आहट सुनाई दी। पुल के नीचे से आकर खरगोश ने पहिली पहिली बार आदमियों को देखा, चार आदमी घोड़ों पर सवार होकर आ रहे थे। "सम्राट के घर का रास्ता कौन-सा है?" खरगोश ने उनको आपस में पूछते देखा। मगर ने बताया था कि लड़की से शादी करने राजकुमार आ रहे थे। खरगोश ने अनुमान किया कि शायद उनमें से चार यही थे। वह उनके पास गया। उनसे उसको भी साथ ले जाने के लिए कहा।

"अरे तुम तो घायल हो। अगर तुमको हम ले गये, क्या सम्राट की लड़की खुश होगी?" कहकर राजकुमारों ने सफ़ेद खरगोश की अवहेलना की। उनमें से एक ने सफ़ेद खरगोश से कहा कि नहाकर रेत में करवट लो, घाव ठीक हो जायेंगे।

सफ़ेद खरगोश ने इसे ठीक समझकर खारे पानी के नाले में स्नान किया, खारा पानी लगते ही, उसके घाव और दुखने लगे। इस ख्याल से कि घाव भर जायेंगे, वह रेत में रेंगने लगा। दर्द तो अधिक हुआ। साथ सारे शरीर पर कुछ कुछ झाग-सा भी आ गया। उसकी घिनौनी-सी शक्ल हो गई।

"छी....मनुष्य कहीं के, इन से तो कुत्ते ही भले।" खरगोश ने सोचा वह घर वापिस जाने के लिए और भी तड़पने लगा। वह पुल के पास आकर जोर जोर से रोने लगा।

इतने में पुल पर एक और मनुष्य आया। वह अपनी पीठ पर चार बड़े बड़े गद्दे लादकर आ रहा था। वह आदमी रोते हुए खरगोश को देखकर रुका। अपना बोझ उतारकर, खरगोश को हाथ में लेकर उसने कहा—"अरे, अरे.... क्यों, यूँ धूल में पड़े पड़े रो रहे हो? क्या हुआ?"

यह ताड़कर कि यह आदमी अच्छा था, खरगोश ने अपनी सारी कहानी उसे सुनाई। घोड़ों पर सवार होकर जो चार दुष्ट उस तरफ़ गये थे, उनके बारे में भी उसने उसको बताया। उसने बताया कि वे उसके भाई ही थे और वह पाँचवाँ राजकुमार था। वे चारों राजकुमारी से विवाह करने आये थे और वह उनका नौकर बनकर आया था।

"तुम क्यों नहीं सम्राट की लड़की से शादी कर लेते? सुना है, वह बहुत खूबसूरत है।" खरगोश ने कहा।

उसने खरगोश को अच्छे पानी से धोया। उसका दर्द तुरत कम हुआ। फिर उसने घावों की मरहम पट्टी करके

उससे कहा—"सफ़ेद खरगोश, तुम यहीं लेटकर आराम करो। मैं फिर आकर तुम्हें सम्राट की लड़की के पास ले जाऊँगा। जो मैंने मरहम पट्टी की है, उससे घावों पर जल्दी बाल भी उग जायेंगे।"

जब वह अपने भाइयों के गद्दे देकर वापिस आया, तो सफ़ेद खरगोश पुल के पास तब भी सो रहा था। तब तक उसके घावों पर बाल भी उग आये थे। पाँचवाँ राजकुमार जब खरगोश को उठाकर सम्राट की लड़की के अन्तःपुर में पहुँचा, तो सम्राट की लड़की ने उन चारों राजकुमारों को ठुकरा भी दिया था, ऐसा उनको मालूम हुआ।

द्वारपालकों ने जाकर सम्राट की लड़की से कहा कि एक और राजकुमार विवाह करने के लिए आया हुआ है और उसके साथ एक सफ़ेद खरगोश भी है।

"सफ़ेद खरगोश? ऐसा खरगोश भी होता है, यह तो हमने कभी सुना भी न था। उस राजकुमार को अन्दर भेजो।" राजकुमारी ने कहा।

राजकुमारी ने सफ़ेद खरगोश को उठाया। उसके शरीर पर कँघा किया, "बड़ा सुन्दर है यह" उसने कहा। उसे वह बड़ा पसन्द आया। खरगोश ने उसे बताया कि राजकुमार ने कैसे उसका उपकार किया था। उसने उसको उससे विवाह करने की सलाह दी। सम्राट की लड़की उसकी सलाह मान गई। उसका पाँचवें राजकुमार के साथ वैभवपूर्वक विवाह हुआ।

सफ़ेद खरगोश अपने देश वापिस न गया। उसका सारा जीवन सम्राट की लड़की के यहाँ ही गुज़र गया।

अचिन्तित पराजय

विक्रमार्क ने हठ न छोड़ा। पेड़ के पास फिर गया। पेड़ पर से शव उतार कर, कन्धे पर डाल, हमेशा की तरह चुपचाप श्मशान की ओर चलने लगा। तब शव में स्थित बेताल ने कहा—"राजा, यदि तुम्हारी यह सब मेहनत अन्त में फालतू गई, तो दुःखी मत होना। चूँकि कभी घूर्जर देश का राजा तारान्ग अपने प्रयत्न के प्रारम्भ करने से पहिले ही असफल हो गया था। ताकि तुम्हें थकान न मालूम हो, उस तारान्ग की कथा सुनाता हूँ। सुनो।" उसने यूँ कहानी सुनानी शुरु की।

घूर्जर देश के राजा की दो पत्नियाँ थीं। बहुत दिनों तक दोनों की ही कोई सन्तान न थी। आखिर छोटी रानी के एक लड़का पैदा हुआ। सबको यह जानकर बड़ी खुशी हुई कि यूँ वंश कायम रह सकेगा

वेताल कथाएँ
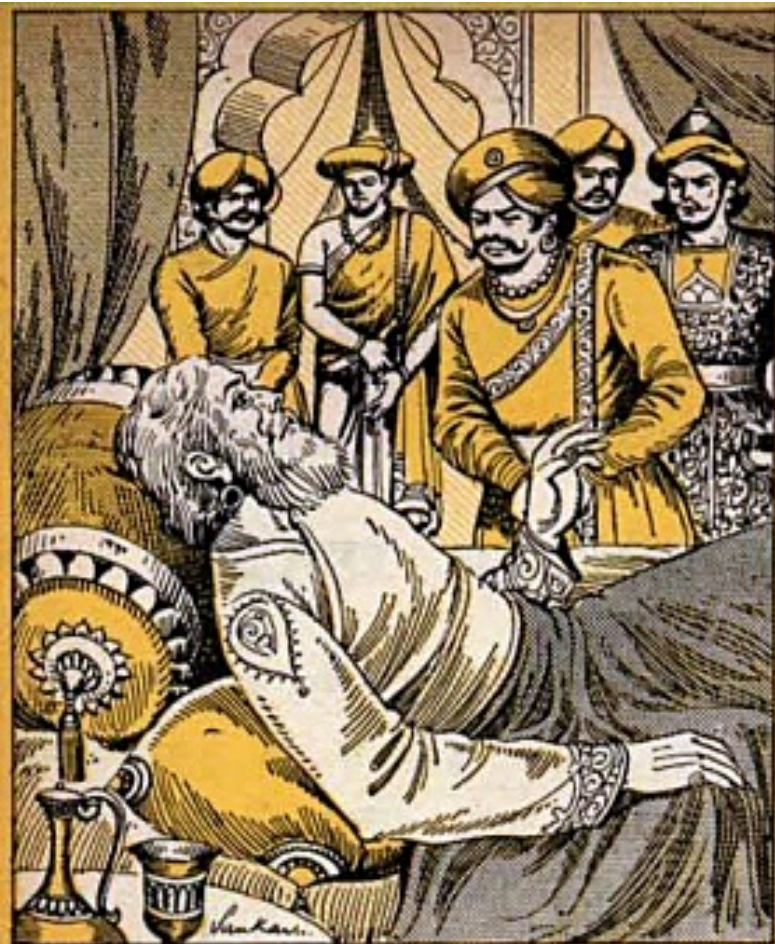
और राज्य को एक युवराज भी मिल गया था। उसका नाम उन्होंने तारान्ग रखा और उसको बड़े लाड़ प्यार से पालने पोसने लगे।

पाँच साल बाद, बड़ी रानी के भी एक लड़का हुआ। उसका नाम चन्द्रान्ग रखा गया। दोनों लड़के बड़े होने लगे। चन्द्रान्ग बड़ी रानी का लड़का था इसलिए राजा के बाद, वही गद्दी पर आयेगा, यह बड़ी रानी के अन्त:पुर में सोचा जा रहा था। इसलिए वहाँ लोग "चन्द्रान्ग" को युवराज कहने लगे।

तारान्ग होने को तो छोटी रानी का लड़का था, पर राजा का बड़ा लड़का था। इसलिए पिता के बाद, गद्दी पर उसी का हक था—यह सोच छोटी रानी के अन्त:पुर के लोग, उसको युवराज कहा करते थे।

पर राजा, अपने दोनों लड़कों को समान दृष्टि से देखा करता था। उसने यह न सोचा कि उनमें राज्य के योग्य कौन था। उसने सोचा, जब वह समस्या आयेगी, तब उस पर सोचा जा सकेगा।

थोड़े दिनों बाद वह समस्या आ ही गई। राजा बीमार पड़ा। मृत्यु के समय, उसने अपने मन्त्रियों को बुलाकर कहा—"मेरे बाद मेरे लड़कों में, जिसे आप राजा बनने योग्य समझें, उसे राजा बना दीजिये।" यह कहकर, उसने आँखें मूँद लीं।

राजा के दाह संस्कार के बाद मन्त्री और पुरोहित वगैरह, कौन राजा बने, इसका निर्णय करने के लिए बैठे। उन्होंने बहुत देर सोचा, पर निश्चय न कर सके कि किसमें राजा बनने की अधिक योग्यता थी। छोटी रानी के पहिले लड़का पैदा हुआ था। तारान्ग के पैदा होते ही देश के लोगों ने सोचा था कि युवराज पैदा हो गया था

और भविष्य में वह राजा बनेगा। उस व्यक्ति के, जिसको चन्द्रान्ग "बड़ा भाई" कहा करता था, होते हुए उसको राजा बनाना उचित न था।

परन्तु चन्द्रान्ग की माँ बड़ी रानी थी। बड़ी रानी के जब लड़का था, तब छोटी रानी के लड़के को गद्दी पर बिठाना ठीक न था। यदि राजा स्वयं यह करता, तो लोग शायद इसे बुरा न समझते। पर मन्त्री और पुरोहित को इस प्रकार का निर्णय नहीं देना चाहिए था। अगर दोनों ही रानियाँ इस विषय में किसी निर्णय पर आतीं, तो भी कोई बात थी। पर दोनों ने कहा कि उसका लड़का ही राजा बनना चाहिए।

इस परिस्थिति में जब मन्त्री को कुछ न सूझा, तो उसने राज्य को दो भागों में बाँटकर, दोनों राजकुमारों को एक एक भाग का राजकुमार अभिषिक्त करने का विचार किया। परन्तु इसके लिए चन्द्रान्ग बिल्कुल न माना। एक बलवान राज्य को दो निर्बल राज्यों में बाँट देना राजनीति न थी और इससे देश की एकता को विघ्न पहुँचेगा। कुछ दिनों बाद, दोनों देशों में ईर्ष्या, शत्रुता और युद्ध भी होने लगेंगे।
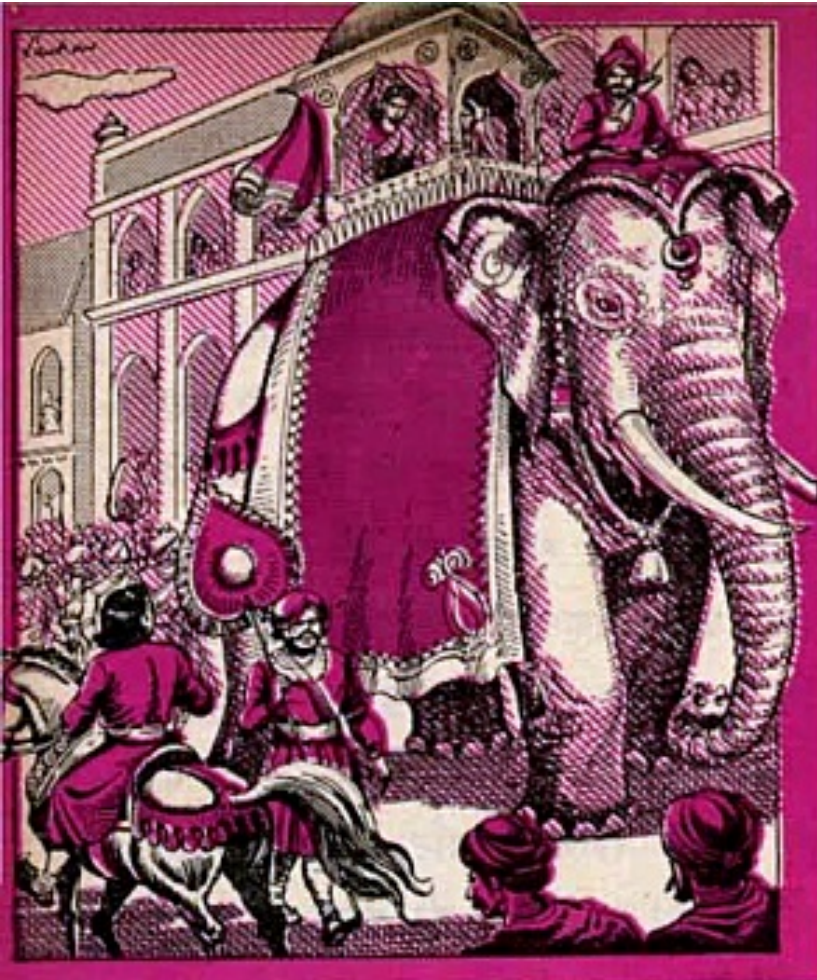
चन्द्रान्ग साधारण क्षत्रिय वीर की पोषाक पहिनकर, घोड़े पर सवार हो, कुछ दिन दक्षिण की ओर गया। फिर वह कंकण नाम के छोटे राज्य में पहुँचा। जब वह घंटा पथ से जा रहा था, तो उसको, उस देश की राजकुमारी विद्युल्लता, हाथी पर सवार हो, देवालय की ओर जाती दिखाई दी। वह अपने नाम के अनुरूप अत्यन्त सुन्दर थी। उसे देखते ही चन्द्रान्ग चकित हो गया।

कंकण राजा की विद्युल्लता नाम की एक ही लड़की थी। जो कोई उससे विवाह करेगा, वह उस देश का राजा बनेगा। इसलिए उसका पिता किसी बड़े वीर से उसका विवाह करना चाहता था। उनके पास कई ऐसे लोग थे, जो तरह तरह की युद्ध विद्या में प्रवीण थे। जल्दी ही विद्युल्लता का स्वयंवर होनेवाला था। स्वयंवर में आनेवालों में जो प्रत्येक विद्या में उन लोगों को हरा देगा, उससे राजा अपनी लड़की का विवाह करना चाहता था।

आखिर तारान्ग के राज्याभिषेक का निश्चय हुआ। चन्द्रान्ग, उस उत्सव की गड़बड़ी में बिना किसी से कहे देश छोड़कर चला गया। चन्द्रान्ग को अपने शौर्य और पराक्रम पर बड़ा विश्वास था। उसने सोचा कि उनसे वह अपने लिए एक अलग राज्य स्थापित कर सकता था।

एक तो लड़के को राज्य नहीं मिला था। फिर वह आँखों के सामने नहीं था, निराश हो कहीं चला गया था, चन्द्रान्ग की माँ बहुत दुःखी हुई और उस दुःख में वह मर भी गई।

चन्द्रान्ग ने यह सुनकर निश्चय किया कि एक ही प्रकार से वह अपनी दोनों इच्छाओं को पूरी कर लेगा। कोई न

कोई राज्य स्थापित करने के लिए ही वह घर से निकला था। कंकण राजधानी में आते ही उसने विद्युल्लता को देखा और सोचा कि बिना उससे विवाह किये, उसका जन्म निरर्थक था। स्वयंवर के दिन, यदि उसने राजा के योद्धाओं को जीत लिया, तो उसकी मन पसन्द स्त्री मिल जायेगी और राज्य भी। कंकण राज्य तो छोटा था, पर उसको लेकर चन्द्रान्ग ने सोचा, आसपास के राज्यों को जीता जा सकता था। वह एक बुढ़िया के यहाँ रहने लगा और स्वयंवर की प्रतीक्षा करने लगा।

कुछ दिनों बाद स्वयंवर का दिन आया। विद्युल्लता के साथ जो विवाह करने आये थे, उनके रहने के लिए अलग व्यवस्था की गई थी। चन्द्रान्ग भी वहाँ गया। उसने यह तो नहीं बताया कि वह फलाने देश का राजकुमार था। सिर्फ़ इतना ही कहा कि वह एक अच्छे क्षत्रिय वंश का था।

विद्युल्लता से विवाह करने के लिए यह आवश्यक था कि वर राजा के योद्धाओं को मल्ल युद्ध, गदा युद्ध, धनुर्विद्या में और अन्त में खड्ग विद्या में भी हराये।

आये हुए राजकुमारों में तीन चौथाई, मल्ल युद्ध में ही हरा दिये गये थे, जो मल्ल युद्ध में जीत गये थे उनमें से कई गदा युद्ध में पराजित हुए। चन्द्रान्ग ने चूँकि अपने को साधारण क्षत्रिय बताया था, इसलिए और राजकुमारों के हार जाने के बाद ही उसका नम्बर आया। राजा ने सपने में भी न सोचा था कि वह जीतेगा। परन्तु उसने एक क्षण में ही चारों तरह के युद्ध विद्याओं में राजा के आदमियों को हरा दिया। कुश्ती के लिए उसने हाथ मिलाये ही थे कि राजमल्ल यूँ गिरा कि मिट्टी चाटने लगा। उसी तरह राजा के आदमी के हाथ से गदा भी जा गिरी। चन्द्रान्ग ने अपने पहिले बाण से राजा के तीरन्दाज का तीर उड़ गया। राजा के आदमी का खड्ग, ज्योंहि चन्द्रान्ग के खड्ग को लगा, उसके दो टुकड़े हो गये।

इस तरह के युद्ध को देखकर, सब चकित थे कि विद्युल्लता वर माला हाथ में लेकर चन्द्रान्ग के पास आई।

ठीक उसी समय तेज़ी से रथ में तारान्ग आया। वह भी स्वयंवर के लिए आया था। परन्तु चन्द्रान्ग की माता की मृत्यु के कारण और चूँकि उसे उसका दहन संस्कार करवाना था, इसलिए वह स्वयंवर के लिए कुछ देरी से पहुँचा।

जब राजा को मालूम हुआ कि आनेवाला घूर्जर राजा था और वह उसकी लड़की से विवाह करना चाहता था, तो उसने ज़ोर से रोना चाहा। वह मन ही मन दुःखी था कि उसकी दी हुई परीक्षाओं में, बड़े बड़े राजा हार गये थे और एक छोटा मोटा आदमी जीत गया था। उस हालत में, देरी के कारण, घूर्जर देश का राजा उसका दामाद नहीं बन सकता था। यह जानकर

तो उसका दुःख और भी बढ़ा। परन्तु उस निराशा में भी उसको एक बात सूझी।

"महाराज, आइये, आइये, परीक्षायें तो अभी खतम नहीं हुई हैं। इस युवक ने अभी अभी हमारे योद्धाओं को हरा दिया है। यदि आपने इस युवक को हरा दिया, तो आपको ही वर माला मिलेगी।" कंकण राजा का ख्याल था, यदि उसका होनेवाला दामाद, घूर्जर देश के राजा द्वारा मार दिया गया, तो अच्छा होगा।

तारान्ग मियान में से तलवार निकाल कर, चन्द्रान्ग के पास आया, उसने चन्द्रान्ग को नहीं पहिचाना। पर चन्द्रान्ग ने अपने भाई को पहिचान लिया। उसने सिर झुका लिया और अपने हाथ की तलवार छोड़ दी। विद्युलता ने अपने हाथ की वर माला चन्द्रान्ग के गले में डाल दी। उसकी तलवार लेकर, उसने कहा—"यह लड़ लड़ाकर थके हुए हैं। जो युद्ध आप करना चाहते हैं, वह मुझसे कीजिये।"

चन्द्रान्ग चकित हो गया। उसने सिर उठाकर विद्युलता और तारान्ग को देखा। इस बार तारान्ग ने भी चन्द्रान्ग को पहिचान लिया। उसने अपनी तलवार मियान में रख ली। रथ पर सवार होकर, बिना किसी से कुछ कहे चला गया।

विद्युलता ने, चूँकि चन्द्रान्ग के गले में वरमाला डाली थी, इसलिए उन दोनों का विवाह करना पड़ा। जब कंकण के राजा को पता लगा कि उसका दामाद घूर्जर देश की बड़ी रानी का लड़का था, तो उसकी खुशी की हद न रही। उसका दुःख जाता रहा।

तारान्ग ने अपनी राजधानी जाकर, अपने मन्त्री आदियों से कहा—"मुझे यह राज्य नहीं चाहिए। मेरा छोटा भाई कंकण

देश में है। उसे ही यह राज्य भी दे दीजिये।"

इस प्रकार चन्द्रांग घूर्जर देश और कंकण देश का राजा बना, विद्युल्लता के साथ उसने सब तरह के आनन्द पाये। तारान्ग राज्य छोड़कर चला गया। उसका पता कहीं किसी को न लगा।

बेताल ने यह कथा सुनाकर कहा—"राजा, मुझे कुछ सन्देह हैं। विद्युल्लता ने घूर्जर देश की रानी होने का मौका छोड़कर क्यों तारान्ग के सामने तलवार उठाई। वरमाला उसने एक अनामक के गले में क्यों डाली? विद्युल्लता से तारान्ग क्यों नहीं लड़ा था, यह तो जाना जा सकता था। परन्तु क्यों नहीं अपने भाई को जीतकर, उसको पाने की उसने कोशिश की? फिर वह अपने राज्य को ही छोड़कर क्यों चला गया? यदि तुमने इन प्रश्नों का जानबूझकर उत्तर न दिया, तो तुम्हारे सिर के टुकड़े टुकड़े हो जायेंगे।"

विक्रमार्क ने कहा—"विद्युल्लता नियमों, का पालन करनेवाली थी। उसके पिता ने अपने नियम का ही स्वयं उल्लंघन करना चाहा था। उसने उसको उल्लंघन करने न दिया। तारान्ग घमंड़ी था, पर कमज़ोर भी था। घूर्जर देश को जब दो भागों में बाँटा जा रहा था, तो चन्द्रान्ग ने तो आपत्ति की थी। पर तारान्ग ने कोई आपत्ति न की थी। वह उस कन्या को तो जीत न सका, उसके साथ मुकाबला भी न कर सका, उसका यह अपमान सब जान जायेंगे यह सोच वह राज्य छोड़कर ही भाग गया।"

राजा का इस प्रकार मौन भंग होते ही बेताल शव के साथ अदृश्य हो गया और पेड़ पर जा बैठा। (कल्पित)

मिट्टी का माधव

चन्द्र नगर में एक गरीब विधवा रहा करती थी। वह बहुत कष्ट उठाकर, जैसे तैसे ज़िन्दगी बसर कर रही थी। उसके एक ही लड़का था, जिसका नाम माधव था। परन्तु वह निरा बुद्धू और आलसी था। इसलिए वह माता की मदद न कर पाता था। परन्तु और दृष्टियों से अच्छा, मौजी आदमी था। फिर भी उसकी माँ को उसके बारे में चिन्ता ही चिन्ता थी। कुछ भी सन्तोष न था। यदि माँ कुछ काम कहती, तो वह उसकी अक्ल में न घुसता। वह सुनता भी न। वह अपनी मस्ती में रहता। यदि वह कभी कुछ माँ का काम करने भी लगता, तो काम बिल्कुल खराब कर देता।

एक दिन माधव की माँ ने, उसे ईन्धन काटकर लाने के लिए कहा। तीन बार कहने के बाद, उसको माँ की बात समझ में आई। फिर वह कुल्हाड़ी कन्धे पर डाल, गाता गाता, जंगल की ओर चल दिया। जंगल की ओर जाने के लिए एक मैदान में से जाना होता था। उस मैदान में माधव ने तीन युवकों को, कड़ी धूप में सोते देखा।

माधव को उन पर दया आई। उसने पासवाले पेड़ से कुछ टहनियाँ काटीं और उन पर इस तरह टहनियाँ लगाईं, ताकि उन पर धूप न आये। जब वह काम पूरा करके जा रहा था, तो युवक नींद से उठे। उन्होंने पूछा—"क्यों, हमारे लिए इतनी छाह का इन्तज़ाम किया?"

"धूप कड़ी है। यह सोचकर कि तुम आराम से सो सकोगे।" माधव ने कहा।

यशपाल

"तुम बड़े अच्छे हो, जो तुम चाहोगे, वह होगा....जाओ।" उन्होंने कहा। सच कहा जाये, तो उनको वैसे वर देने की शक्ति थी। क्योंकि वे देवता थे।

परन्तु माधव की अक्ल में यह भी न घुसा। उसे न सूझा कि क्या कहे। उसने दोनों को प्रणाम किया। सीधे जंगल गया। वह लकड़ियाँ काटने लगा। उसने गठ्ठर बनाया। इतना बड़ा गठ्ठर बन गया कि वह न उठा सका। जब उसे कुछ न सूझा, तो वह उस गठ्ठर पर स्वयं बैठ गया। "मैं, इसे अपने घर नहीं ले जा सकता। क्या अच्छा हो, यदि यह मुझे घर ढ़ोकर ले जाये।" उसने सोचा।

तुरत वह गठ्ठर हवा में उड़ा। माधव को उठाकर, बड़े वेग से वह घर की ओर चल पड़ा। जब वह घंटापथ से जा रहा था राजकुमारी प्रभावती माधव और उस लकड़ी के गठ्ठर को, जिस पर वह सवार था देखकर, बड़े ज़ोर से हँसी। माधव ने सिर उठाकर, खिड़की के पास खड़ी प्रभावती को हँसती हुई देखकर कहा— "तुम मुझे देखकर हँसती हो? जब तुम्हारा पति बनूँगा, तब क्या तुम्हारी खबर लिये
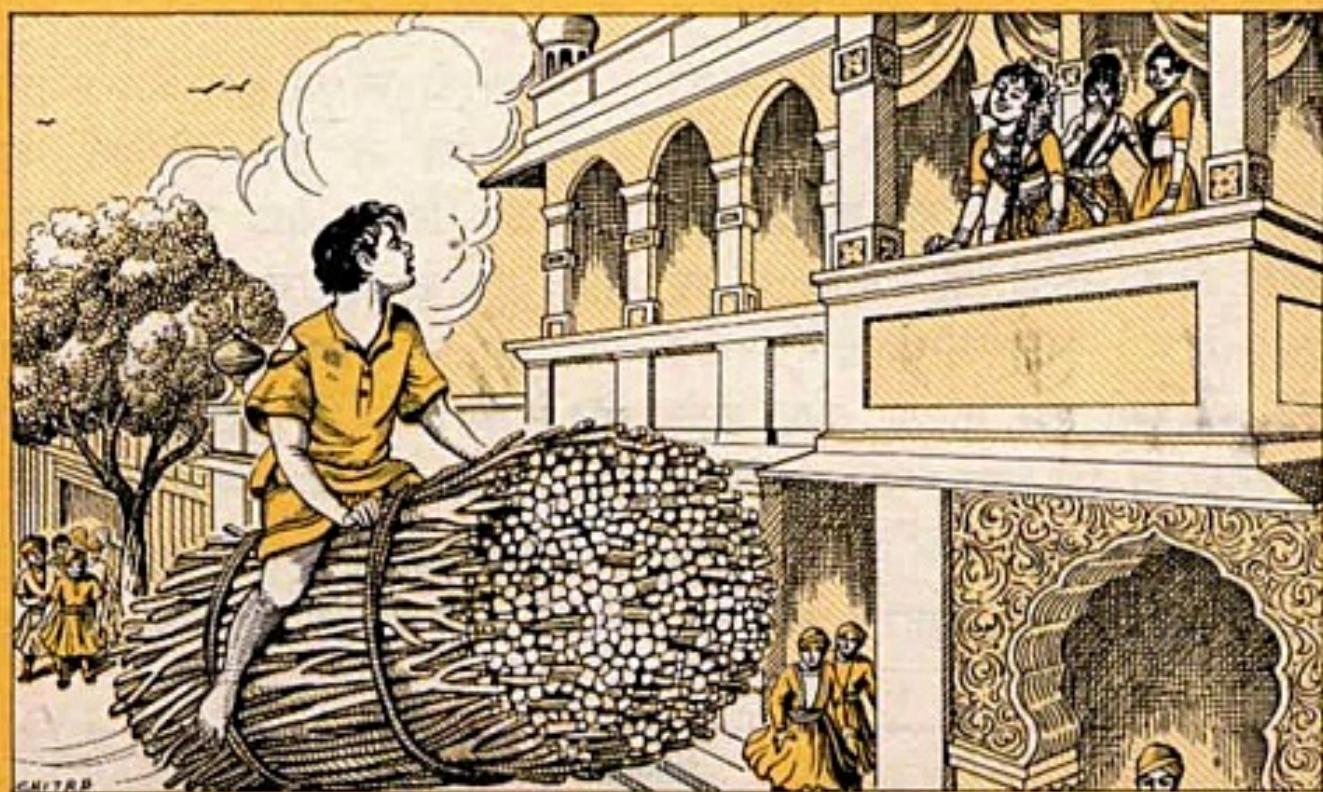
बिना रहूँगा ?" उसे तब न मालूम था कि उसको एक वर प्राप्त था, जिसके कारण, जो कुछ वह चाहता, वह होगा।

फिर भी उसकी शक्ति काम कर रही थी। उसकी महिमा के कारण राजकुमारी ने तुरत हँसना छोड़ दिया और खिड़की के पास खिन्न खड़ी हो गई और लम्बी लम्बी साँसे लेने लगी। उसकी सहेलियाँ उसको देखकर उसका दुःख दूर न कर सकीं। तब उन्होंने राजा से कहा।

राजा ने अपनी लड़की की ओर देखकर सोचा—"दुःखी न होगी, तो क्या होगी? यह शादी के लायक हो गई है। इसकी शादी जल्दी कर देना अच्छा है।" उसने ऊपर से कहा—"बेटी, मैं तुम्हारी शादी कर देना चाहता हूँ। राजकुमारों में यदि तुम्हें कोई पसन्द हो, तो बताओ।"

प्रभावती ने लम्बी साँस छोड़कर कहा—"जो थोड़ी देर पहिले लकड़ियों के गट्ठर पर सवार होकर एक लड़का गया था, सिवाय उसके मैं किसी और से शादी नहीं करूँगी।"

राजा को अपनी लड़की की बातें समझ में न आयीं। प्रभावती की सहेलियों ने जब

सारी बात बतायी, तो राजा को अपनी लड़की पर गुस्सा आ गया।

प्रभावती उससे शादी करने के लिए मान गई थी, पर वह उसका नाम तक न जानती थी। इस तरह के ऊँटपटाँग प्रेम में पड़ने के कारण, राजा ने उसको खास दण्ड देना चाहा। पर मन्त्रियों ने उसे रोकते हुए कहा—"महाराज, आपकी बस एक ही सन्तान है। जिस युवक से इसने प्रेम किया है, हो सकता है, वह किसी देश का राजकुमार ही हो। जल्दबाजी न कीजिये।"

"पहिले उसे पकड़ना है न? क्या उपाय है?" राजा ने कहा।

"नगर में जितने भी विवाह योग्य युवक हैं, उनको बुलाकर दावत दीजिये, जो इस तरह आयेंगे उनमें से, जिसके साथ राजकुमारी विवाह करना चाह रही है, वह उसको आसानी से पहिचान लेगी।" मन्त्रियों ने कहा।

राजा मान गया। उसने नगर के बड़े बड़े कुटुम्बों के युवकों को दावत के लिए निमन्त्रित किया। "बताओ, इनमें से तुम किसके साथ विवाह करना चाहती हो?" उसने अपनी लड़की से पूछा। प्रभावती ने सब को देखकर कहा—"मैं जिससे प्रेम करना चाहती हूँ, वह इनमें नहीं है।"

राजा ने गुस्से में अपनी लड़की को मार देना चाहा। मन्त्रियों ने उसे फिर रोककर कहा—"नगर में जो बाकी और अविवाहित हैं, उनको दावत दीजिये। हो सकता है, राजकुमारी जिसे चाहती है, उनमें हो।"

"मेरी लड़की किसी ऐरे गैरे से शादी करे, यह कैसे मैं बर्दाश्त कर सकता हूँ।" राजा ने कहा।

"यदि ऐसा हुआ, तो वही होगा, जो भाग्य में है। उसको रोकनेवाले हम कौन हैं?" मन्त्रियों ने कहा।

राजा ने एक और दावत दी। नगर के सभी कुटुम्बों के युवकों को उसने बुलवाया। यह माधव को पता भी न लगा। उसकी माँ ने ज़रूर सुना। उसने उसको दावत में जाने के लिए कहा। उसने जाने से इनकार कर दिया। "अरे, बड़ा अच्छा भोजन देंगे, पेट-भर खाकर चले आना।" माँ ने उसको जबर्दस्ती दावत के लिए भेजा। वह अपने पुराने कपड़े पहिनकर, दावत के लिए गया।

परन्तु राजकुमारी ने उसे देखते ही कहा—"यह है, जिससे मैं विवाह करना चाहती हूँ।" उसने माधव को दिखाया।

"तुम इस बुद्धू से शादी करना चाहती हो?" राजा ने चकित होकर पूछा।

"हाँ...." प्रभावती ने कहा।

राजा आगबबूला हो उठा।

"अच्छा, अगर तुम्हारी यही ज़िद है, तो तुम कर लो उससे शादी, फिर उसके बाद जो कुछ मुझे करना है, मैं करूँगा।" राजा ने कहा।

तुरत पुरोहित आया। उसने माधव और प्रभावती का विवाह कर दिया। विवाह समाप्त होते ही राजा ने उन दोनों को एक पीपे में बन्द करवा दिया और समुद्र में दूर उसे फिंकवा दिया। समुद्र में ज्वार था, उसकी लहरें उसको दूर ले गईं।

ज्योंहि यह आज्ञा, राजकुमारी की सहेलियों ने सुनीं, त्योंहि उन्होंने बहुत-सी खाने पीने की चीज़ें, उसके साथ बाँध दीं।

पीपा में बहते हुए प्रभावती ने कहा—"हमारी मौत बदी है। यदि इस पीपे में

कहीं छिद्र न हो, तो हम घुँटकर, मर मरा जायेंगे और यदि छेद होंगे, तो हम समुद्र में डूब जायेंगे। अगर ऐसे भी न मरे, तो जो कुछ मेरे पास खाने को है, उसके खतम होते ही हम मर जायेंगे।" वह ज़ोर से रोने लगी।

"इसमें रोने की क्या बात है? अभी हम ज़िन्दा हैं न?" बेअक्ल माधव ने कहा।

"तुम में बिल्कुल अक्ल नहीं है। यदि किसी जहाज़ ने आकर हमें नहीं बचाया, तो हम कितने समय तक जीवित रहेंगे।"

"यदि तुम जहाज़ ही चाहती हो, तो यह लो। यदि मैं उसे चाहूँ, तो वह एक घड़ी में आयेगा। क्या उन तीनों ने उस दिन मुझे वर नहीं दिया था कि जो मैं चाहूँगा, वह होगा?"

"यदि ऐसा ही वर है, तो अब तक क्या कर रहे थे? तुरत चाहो कि हमारे पास एक बड़ा जहाज़ आये।" प्रभावती ने कहा।

"उसके लिए इतनी जल्दी की क्या बात है?" पहिले खाने की चीज़ें तो निकालो। उन्हें क्यों फिजूल खराब करती हो?" माधव ने कहा।

प्रभावती तो इस फिक्र में थी कि कैसे उस पीपे से जल्दी निकला जाये, उसने झट खाने की चीज़ें माधव को दे दीं। उसने उन्हें खा भी लीं। खाने के बाद, माधव ने चाहा कि वे पीपे से बाहर हो जायें और पास ही एक जहाज़ आये और वह उन्हें किनारे पर पहुँचाये।

तुरत पीपे का ढ़कन ज़ोर से टूटा। जब वे दोनों बाहर आये, तो कोई बड़ा जहाज़ पास ही में था। पति पत्नी उस पर सवार होकर, किनारे पर पहुँचे।

प्रभावती के कहने पर माधव ने चाहा कि समुद्र के किनारे, एक बड़ा राजमहल हो उसके चारों ओर बाग हो और उसमें बहुत-से नौकर-चाकर हों।

वहाँ कुछ दिन सुख से रहने के बाद, प्रभावती ने माधव से कहा—"हमें एक और बात चाहनी है, तुम देखने में अभी अच्छे नहीं मालूम होते। तुम यह चाहो कि तुम देखने में खूबसूरत और अक़्लमन्द बन जाओ।"

"यदि तुम यही चाहती हो, तो वह भी मैं चाहूँगा।" माधव ने कहा।

इस चाह के कारण माधव की शक्ल में ही नहीं, बुद्धि में भी बहुत परिवर्तन आ गया। अब कदम कदम पर पत्नी की सलाह की ज़रूरत न थी। उस शक्ति से उसने एक अपने लिए राज्य भी बना लिया। उसने लोगों को सुखी ही नहीं बनाया, बल्कि अपने नौकरों को भी उसने अधिक कष्ट न होने दिये।

प्रभावती और उसके पति को समुद्र में डलवाने के बाद, राजा को बड़ा पछतावा हुआ। कुछ साल बाद, वह शिकार के लिए निकला, दूरी पर एक राजमहल देखकर उसने वहाँ जाना चाहा। जब वह वहाँ गया, तो उसको अपनी लड़की दिखाई दी। वह अपनी लड़की से फिर मिलकर बड़ा खुश हुआ।

माधव ने भी अपनी माँ को बुलाया। उसे भी किसी प्रकार की कोई कमी न होने दी। बुढ़ापे में उसे कोई कष्ट न था, पर वह विश्वास भी न कर सकी कि वह उसका लड़का था और उसकी पत्नी उसकी बहू थी। वह कभी कभी अपने लड़के को याद करके खिझा करती थी "पगला कहीं का, विचारा कहाँ गया है?"

यम से युद्ध करने के लिए रावण यमलोक पहुँचा। वहाँ उसने उन पापियों को देखा, जो नरक के नाना कष्टों को सह रहे थे और उन पुण्यात्माओं को भी, जो स्वर्ग में सब सुखों का आनन्द ले रहे थे। कुरूपी, क्रूर यम के किंकर, पापियों को, कीड़ों को खिला रहे थे। कुत्तों द्वारा कटवा रहे थे। वैतरणी नदी में तैरवा रहे थे। तपती रेत में फेंक रहे थे। नरक में पड़े लोग शव की तरह थे। दर्द और थकान के कारण हाय हाय कर रहे थे और दूसरी ओर पुण्यात्मा समस्त सुख अनुभव कर रहे थे।

लाखों पापियों को यूँ कष्ट सहता देख, रावण को उन पर दया आयी। वह उनको छोड़ने लगा। यह देख यम के दूतों को क्रोध आया। वे रावण के पास आये। उन्होंने उस पर तरह तरह के अस्त्र फेंके। कई पुष्पक में मंड़राने लगे। और उसके आसन आदि, निकालकर फेंकने लगे। चूँकि वह अक्षय विमान था। इसलिए बहुत नाश करने पर भी वह पहिले की तरह बना रहा।

इसके बाद नारद, सीधे यम के पास गया। यम ने उसका उचित आदर सत्कार किया और पूछा कि वह किस काम पर आया था।

"यम राजा, दशग्रीव नाम का अजेय राक्षस तुम्हें वश में करके, तुम्हें जीतने के लिए आ रहा है यही बताने के लिए मैं इतनी जल्दी आ रहा हूँ। न मालूम तुम्हारा यम शासन क्या हो!" वह अभी कह ही रहा था कि दूर चमकता विमान दिखाई दिया।

रावण ने यम किंकरों के साथ कुछ देर युद्ध किया। फिर उसने उन पर पाशुपतास्त्र का उपयोग किया। उस कारण उस प्रान्त में आग लग गई और वहाँ के पेड़ पत्ते सब राख हो गये। ज्वालायें चारों ओर फैल गईं। यमदूत उन लपटों में कीड़ों की तरह जल जला गये।

रावण ने और उसके मन्त्रियों ने भयंकर गर्जन किया। इतना भयंकर गर्जन कि दिशायें भी काँप उठीं।

यह गर्जन सुन यम ने समझा कि युद्ध में रावण जीत गया था। उसने अपने सारथी को बुलाकर, युद्ध के लिए रथ को सन्नद्ध करने के लिए कहा।

क्षण में एक रथ आ गया, जिसमें लाल घोड़े जुते हुए थे। मृत्युदेवता पाश और मुदगर लेकर, रथ में यम के सामने खड़ा था।

यम जब रथ में सवार हुआ, तो एक तरफ़ कालदण्ड था और दूसरी ओर कालपाश। जब इस प्रकार यम युद्ध के लिए निकला, तो तीनों लोक सिहर उठे और देवता भी काँपे।

यम के रथ के घोड़े क्षण में उसको रावण के पास ले गये। अति भयंकर रथ को और उसमें खड़े मृत्युदेवता को देख, रावण के मन्त्री भयभीत हो चारों ओर भागने लगे। रावण बिल्कुल न डरा। वह वहीं खड़ा रहा।

दोनों में सात रात तक बहुत ही भयंकर युद्ध हुआ। यम ने अपने अस्त्रों से रावण को घायल तो कर दिया पर वह उसको न डरा सका, न मैदान से भगा ही सका। यही नहीं, रावण ने यम को और मृत्युदेवता को अपने बाणों से घायल कर दिया।

यह देख, मृत्यु ने यम से कहा—"यमधर्मराज, इस राक्षस से मुझे युद्ध करने दो। इसे मैं क्षण में मार दूँगा। मारना मेरा अधिकार है। मैंने कितने ही राक्षसों की मृत्यु देखी है। प्रलय में तो लोकों को ही नष्ट होते देखा है। फिर यह राक्षस है ही क्या!"

"तुम जरा इसे देखते रहो। मैं ही इसे मार दूँगा।" कहते हुए यम ने कालदण्ड उठाया। उसमें से लपटें निकल रही थीं। वह बड़ा भयंकर दीख रहा था,

यम उसे रावण पर छोड़नेवाला ही था कि ब्रह्मा प्रत्यक्ष हुआ। उसने कहा—"यमधर्मराज, इसका उपयोग न करो। यदि इससे रावण मर गया, तो जो वर मैंने इसे दिया है झूठा सिद्ध होगा। यदि वह न मरा, तो कालदण्ड को बनाने का उद्देश्य ही गलत साबित होगा। मृत्यु के साथ मैंने इस दण्ड को भी अचूक बनाया था। इसलिए यदि तुमने कालदण्ड को रावण पर छोड़ा, तो मेरी एक बात जरूर झूठी हो जायेगी।"

ब्रह्मा की बात सुनकर यम ने कालदण्ड अलग रख दिया। जब रावण को वह नहीं मार सकता था, तो यम को न सूझा कि क्या किया जाये। वह युद्ध भूमि को छोड़कर अन्तर्धान हो गया और ब्रह्मा और अन्यदेवताओं के साथ यकायक स्वर्ग चला गया।

रावण ने युद्ध घोषित कर दिया कि उसने यम को जीत लिया था और वह पुष्पक में सवार होकर यमपुर गया। यह सब अपनी आँखों देखकर नारद बड़ा खुश हुआ।

यम को जीतकर, मारीच आदि मन्त्रियों की प्रशंसा पाकर रावण पुष्पक में पाताल लोक गया। समुद्र में गया, जहाँ वरुण का शासन था। उस भोगवती नगर को भी स्वाधीन कर लिया, जहाँ वासुकी आदि नाग रहा करते थे। फिर मणिमति नगर गया, जहाँ निवातकवच आदि रहा करते थे। विविध शस्त्रों से सुसज्जित अजेय निवातकवच रावण से युद्ध करने के लिए तैयार हो गये।

एक वर्ष तक युद्ध होता रहा। पर जय पराजय का निर्णय न हो सका। तब ब्रह्मा वहाँ विमान में आया और उसने दोनों पक्षों में सन्धि करवाई। अग्नि के समक्ष उन दोनों में मैत्री स्थापित करके चला गया। रावण निवातकवचों के यहाँ एक साल तक अतिथि रहा। उसने उनके नगर में उसी तरह सुख से समय बिताया, जिस तरह अपने नगर में बिताया करता था। निवातकवचों से उसने निन्नानवें मायायें सीखीं, जो वह पहिले न जानता था। फिर वरुण के नगर को खोजता चला गया।

रास्ते में कालकेय का यश्मनगर आया। कालकेयों का और रावण का युद्ध हुआ। रावण ने बहुत से कालकेय वीरों को मार दिया। इस तरह मारे जानेवालों में विद्युजिह्वा भी था। शूर्पणखा का पति भी था। वह बड़ा बलवान था। वह बिजली-सी अपनी जीभ से राक्षसों को चाट दिया करता था। रावण ने उसे तलवार से मार दिया। कुल चार सौ कालकेय वीर रावण के हाथ मारे गये।
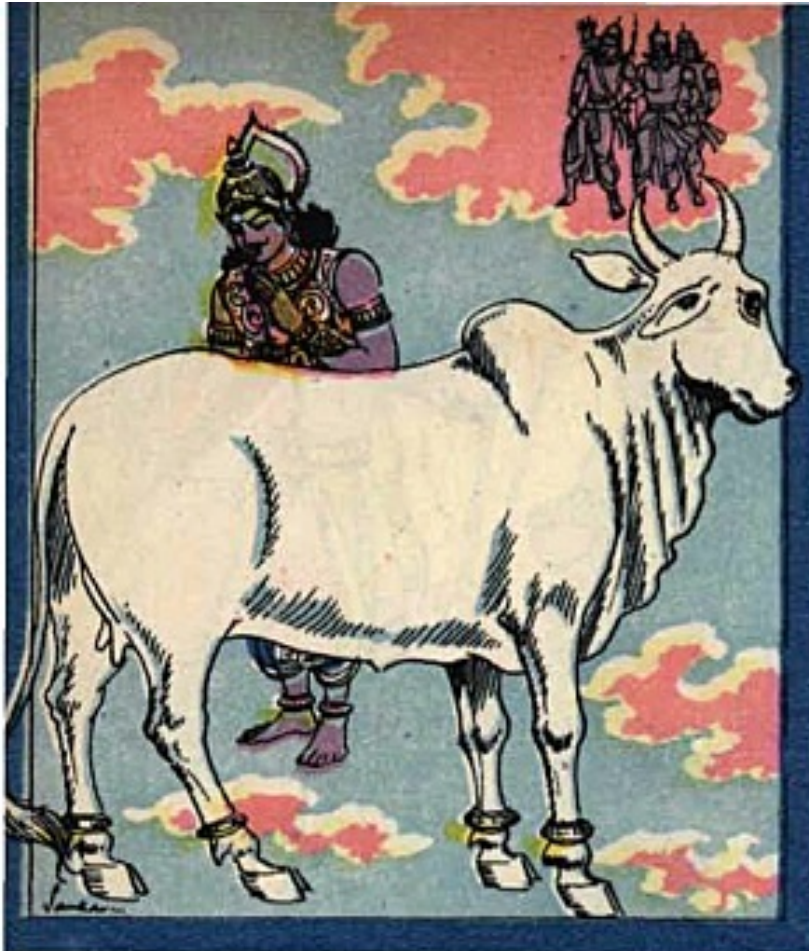
वहाँ से रावण, वरुण के प्रासाद में आया। वह सफेद बादल की तरह कैलाश की तरह था। वहाँ सदा दूध देनेवाली कामधेनु रावण को दिखाई दी। उसके दूध से ही क्षीर समुद्र बना था। उस समुद्र से चन्द्रमा निकला और अमृत भी निकला। उसकी झाग खाकर कुछ ऋषि जीवित थे। शिव का वाहन नन्दी, कामधेनु की ही सन्तान थी।

इस प्रकार के कामधेनु की रावण ने परिक्रमा की और वह वरुण के प्रासाद के पास पहुँचा। वरुण के योद्धाओं ने रावण से युद्ध किया। रावण ने उनके नेताओं को मार दिया। उसने कुछ योद्धाओं से कहा—"जाकर वरुण से कहो कि रावण युद्ध करने के लिए आया है?"

वरुण के लड़के, पोते, अपने नौकर चाकरों के साथ रथ में सवार होकर रावण पर आक्रमण करने आये और वे रावण और उसके मन्त्रियों द्वारा एक क्षण में हरा दिये गये। उनके नौकर चाकरों के मारे जाने के बाद वरुण के पुत्र भी वीरोचित रूप से लड़े और वे भी हरा दिये गये। फिर जब रावण ने वरुण के पास खबर भेजी, तो पता लगा कि वह घर में न था। संगीत सुनने ब्रह्मलोक गया हुआ था।

रावण ने अपनी विजय घोषित की और पुष्पक में सवार होकर, फिर यक्ष नगर पहुँचा। वह वहाँ घमंड में घूम रहा था, तो उसे एक अद्भुत भवन दिखाई दिया। उसमें अलंकार के तौर पर वैडूर्य तोरण मोतियों की झालरें, सोने के स्तम्भ और स्फटिक सोपान दिखाई दिये। रावण ने प्रहस्त से कहा—"मालूम करो इतना सुन्दर घर किसका है?"

प्रहस्त जब पहिला प्राकार पार करके अन्दर गया, तो वहाँ कोई न था। जब वह सात प्राकारों को पार करके अन्दर गया, तो वहाँ एक ज्वाला थी। उसके बीच में एक दिव्य पुरुष था। वह सूर्य की तरह चमक रहा था। इसलिए उसको देखना मुश्किल हो रहा था। वह महापुरुष प्रहस्त को देखते ही, सन्तुष्ट हो हँसा। वह हास सुनकर प्रहस्त का शरीर पुलकित हो उठा। वह तुरत रावण के पास गया, जो कुछ उसने देखा था, उसे उसने उसको बताया।

यह जानकर जब रावण पुष्पक पर से उतरा और उस भवन में प्रवेश करने लगा, तो एक भयंकर आकृति सारे द्वार को घेरकर खड़ी हो गई। उसके माथे पर चन्द्रमा था और मुख से भयंकर ज्वालायें निकल रही थीं, होठ लाल थे और मुख सफेद था और जटायें ऊपर उठी हुई थीं। बड़ी बड़ी मूँछें थीं। बड़ी दाढ़ी थी। बड़े बड़े दान्त थे और हाथ में बड़ा मुदगर था। इस भयंकर आकृति को देखकर रावण सिहर उठा।

उसने रावण को देखकर कहा—"राक्षस, डरो मत, बताओ, तुम क्या चाहते हो?"

"मुझे युद्ध चाहिए।" रावण ने कहा।

"किससे युद्ध करना चाहता हो? मुझ से? या बलि से?" उस आकृति ने पूछा।

"जिसका यह भवन है, उससे नहीं, तो तुम जिससे युद्ध करने के लिए कहोगे उससे?" रावण ने कहा।

"अन्दर बलि है तुम, चाहो तो उस महामहिम से युद्ध करो।" उस आकृति ने कहा।

रावण अन्दर गया, सूर्य की तरह चौंधियानेवाले बलि को वह देख न सका। बलि ने रावण को उठाकर अपनी गोद में बिठाकर कहा—"किस काम पर आये हो? जो तुम चाहते हो बताओ, मैं पूरी करदूँगा।"

"और कुछ नहीं, महानुभाव कहते हैं, विष्णु ने तुम्हें पहिले धोखा देकर, बन्धन में रखा था। तुम्हें छुड़ाने की शक्ति मुझ में है। इसलिए वह काम करना चाहता हूँ।" रावण ने कहा।

"तो यह बात है? तो सुनो, तुम्हें एक छोटी-सी बात सुनाता हूँ। वहाँ गिरे हुए कुण्डल को तो एक बार लाओ।" बलि ने कहा। रावण ने जब पास जाकर देखा, तो वह कुण्डल एक बड़े चक्र जितना बड़ा था। रावण ने उसे उठाना चाहा, पर उठा न सका। रावण ने जब दोनों हाथ लगाकर उसे उठाने का प्रयत्न किया, तब भी न उठा सका।

यह देख बलि ने रावण को पास बुलाकर कहा—"जिसे तुम हिला भी नहीं पाये हो, उस कुण्डल को, हमारा पूर्वज हिरण्यकश्यपु कान में लगाया करता था। उसको वर प्राप्त थे कि वह किसीसे न मारा जायेगा। आखिर विष्णु ने नरसिंह रूप धारण करके उसे मार दिया। उस विष्णु को ही तुमने द्वार के पास देखा था। वह हमेशा वहीं रहता है।"

यह सुन रावण क्रुद्ध हो, द्वार के पास आया। पर उसे वहाँ कोई न दिखाई दिया।
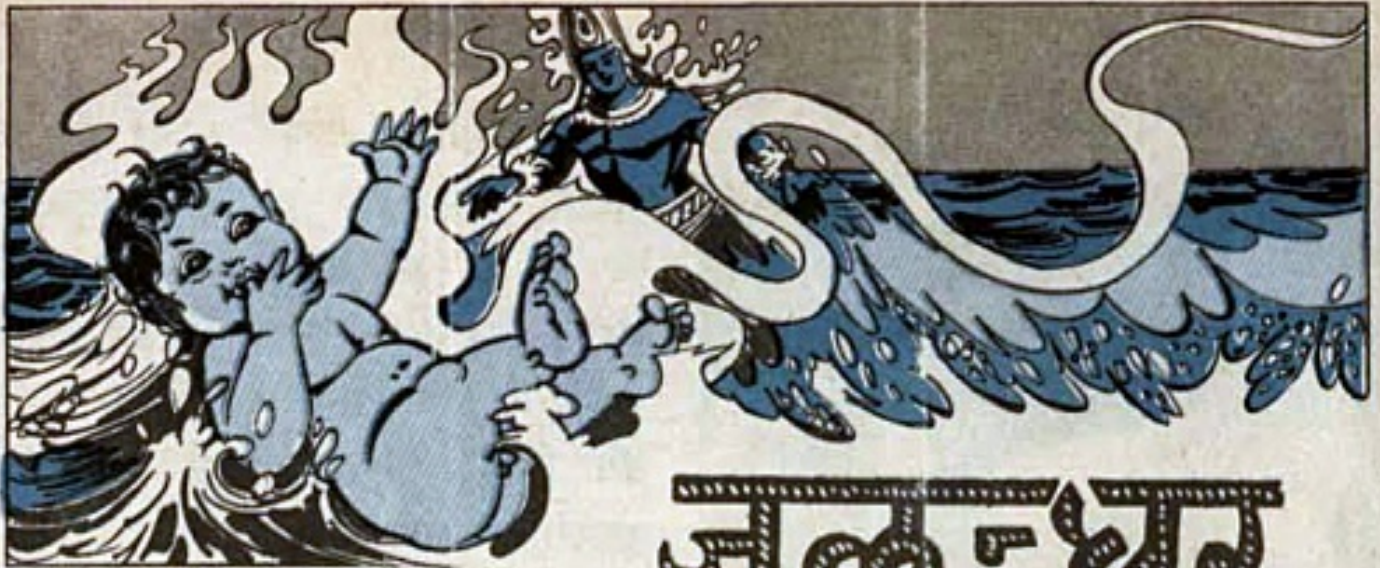
जलन्धर

ब्रह्मा से वर प्राप्त करके, तारकासुर जब तीनों लोकों में उत्पात मचा रहा था, तब इन्द्र को मालूम हुआ कि सिवाय शिव की सन्तान के उसे कोई न मार सकता था। इसलिए मन्मथ को वसन्त के साथ शिव के पास भेजा, ताकि वह पार्वती पर मुग्ध हो जाये। शिव तपस्या कर रहा था। मन्मथ उसके पास गया, उसने उस पर अपने पुष्प बाण फेंके। शिव की तपस्या भंग हो गई। वह क्रुद्ध हो उठा। उसने अपनी तीसरी आँख खोली, उसमें से ज्वालायें निकलीं और मन्मथ भस्म हो उठा।

मन्मथ के भस्म होने के बाद, शेष अग्नि समुद्र में पड़ी और उसमें से एक लड़का निकला। जब वह लड़का रोया, तो देवता डर गये और वे भागे भागे ब्रह्मा के पास गये। ब्रह्मा उनको साथ लेकर समुद्र के पास आया, उसने पूछा—"क्या गड़बड़ है यह!"

समुद्र ने ब्रह्मा को अपना शिशु दिखाकर कहा—"यह मेरा पुत्र है। इसका नामकरण कीजिए और इसकी जन्म कुण्डली बताइये।"

ब्रह्मा ने उस शिशु का नाम जलन्धर रखा। "इसे सिवाय शिव के किसी और का भय न होगा।"

जलन्धर बड़ा हुआ। वह विवाह योग्य हुआ। समुद्र के मित्र कालनेमी की वृन्दा नाम की लड़की थी। समुद्र ने कालनेमी से बात करके, अपने लड़के का, वृन्दा से विवाह करा दिया।

एक दिन जलन्धर की सभा में राक्षसों का गुरु शुक्राचार्य आया। बातों बातों में शुक्राचार्य ने जलन्धर को बताया, कैसे राक्षसों ने देवताओं के साथ अन्याय किया था। "पहिले जब समुद्र का मथन किया गया था, तो उसमें से अमृत के अलावा बहुत-सी मणियाँ और रत्न निकले। उन सबको देवताओं ने ले लिया। समुद्र को कुछ भी न दिया। अमृत भी उन्होंने ले लिया, चूँकि राहु ने अमृत पी लिया था, इसलिए उन्होंने उसका सिर काट दिया।" यह पुरानी कहानी सुनकर, जलन्धर को गुस्सा आया। उसने धरचर नाम के दूत को भेजकर, जो कुछ सम्पत्ति समुद्र से ली गई थी उसे वापिस देने के लिए कहा। इन्द्र ने जलन्धर के दूत की परवाह न की। "हमारे छोटे भाई विष्णु ने तुम जैसे कितने ही राक्षसों का मारा है। तुम्हारी बात क्या है?"

जलन्धर ने देवताओं पर युद्ध घोषित कर दिया। उससे युद्ध करने के लिए देवता विष्णु को लाये। विष्णु ने जलन्धर से काफ़ी समय युद्ध किया। वह उसे जीत न सका। हार मानकर, वह लक्ष्मी के साथ जलन्धर के घर रहने को मान गया। जब विष्णु ही पराजित हो गया, तो देवताओं की तरफ़ से, जलन्धर से लड़ने के लिए कोई न रहा। उन्होंने नारद के पास जाकर अपना रोना रोया। तब नारद ने वचन दिया कि वह जलन्धर की खबर लेगा।

नारद ने जलन्धर के साथ जाकर कहा—"जलन्धर, तुम्हारी सम्पत्ति भी क्या है, तुम्हारे पास अच्छे घर, घोड़े, हाथी, सब कुछ है, पर तुम्हारे पास लोकोत्तर स्त्री नहीं है। स्त्रियों में उत्तम पार्वती है और वैसी स्त्री, श्मशान में

विचरनेवाले शिव के पल्ले पड़ी। शिव को पार्वती की सी पत्नी क्यों मिलनी चाहिए? तुम ही जाकर उसे ले आओ। तुमको कौन रोक सकता है?"

नारद की बातों पर विश्वास करके, आगे ही जलन्धर ने शिव के पास खबर भेजी कि पार्वती को उसके पास भेज दे। तुरत शिव ने जलन्धर पर आक्रमण किया। शिव की सेना और राक्षसों में भयंकर युद्ध हुआ।

उस समय जलन्धर को एक चाल सूझी। उसने शिव का रूप धारण किया। कुछ राक्षसों से प्रमथों का रूप धारण करवाया। फिर पार्वती की जगह गया। उसने पार्वती के पास नौकर से कहलाया—"शिव तुम्हारे लिये आये हैं!" परन्तु पार्वती के सामने जाते ही उसको काठ-सा मार गया।

यह देख पार्वती को शक हुआ। वह अपनी जगह से भाग गई और विष्णु का ध्यान करने लगी। विष्णु प्रत्यक्ष हुए। "क्यों मुझे बुला भेजा है?" उसने पार्वती से पूछा।

"जलन्धर की पत्नी वृन्दा का पतिव्रत तुम भंग करो। उसके पतिव्रत के कारण ही जलन्धर अजेय है।" पार्वती ने कहा।

उस समय वृन्दा को एक खराब सपना आया। सपने में उसने देखा कि जलन्धर एक भैंसे पर सवार होकर दक्षिण की ओर जा रहा था और जलन्धर की नगरी जल रही थी, उसने और भी कई अपशकुन देखे। वह घबरा गई और पागल की तरह बाग में घूमने लगी। वह यूँ घूम रही थी कि एक पेड़ के नीचे विष्णु उसको एक बूढ़े मुनीश्वर के रूप में दिखाई दिये। पेड़ पर दो बन्दर थे। वृन्दा ने उससे पूछा—"मुनीश्वरा! आप अपनी दिव्य

दृष्टि से देखकर बताइये कि मेरे पति जीवित हैं कि नहीं?"

"तुम्हारा पति जलन्धर शिव के हाथ मारा गया है।" मुनि के वेष में विष्णु ने कहा।

वृन्दा बहुत ही घबरा गई। उसने मुनि से प्रार्थना की। "स्वामी, जैसे भी हो, मेरे पति को फिर से जीवित कीजिये।"

"मैं अपनी तपस्या के बल से तुम्हारे पति को अभी जीवित किये देता हूँ।" कहकर, विष्णु ने पास के झरने में डुबकी लगाई और जब वह बाहर निकला, तो उसका रूप जलन्धर का-सा था। वह वृन्दा के पास आया। वृन्दा यह धोखा न समझ सकी। उसने विष्णु का आलिंगन किया और वह अपने पतिव्रत धर्म को खो बैठी।

फिर वृन्दा को धोखा मालूम हुआ। उसने विष्णु को शाप देते हुए कहा—"तुमने यह काम किया है, इसलिए तुम पत्नी का विरह सहो और बन्दरों को साथ लेकर घूमो।" यह कहकर उसने चिता बनाई और उसमें जलकर वह भस्म हो गई।

विष्णु वहीं स्तब्ध खड़ा रहा। चूँकि वृन्दा का पतिव्रत भंग हो गया था, इसलिए जलन्धर की अब कोई रक्षा न रह गई थी। यह जानकर कि उस दुष्ट ने पार्वती का सतीत्व भंग करने की कोशिश की थी, शिव और जोश से लड़ा और उसने जलन्धर को मार दिया।

फिर शिव और पार्वती, विष्णु के पास आये। वृन्दा जहाँ राख हो गई थी, जब उन्होंने बीज फेंके, तो वहाँ तुलसी, आमला और मालती के पौधे उग आये।

४९. प्वे का शिखर

प्वे (फ्रान्स) नगर के समीप का यह पहाड़ कभी ज्वालामुखी था। जब कोमल पत्थर पिघल पिघला गये, तो यह बच गया। करीब हज़ार वर्ष पहिले इसके उपरले भाग पर २७९ फीट ऊँचे, इस विचित्र प्रार्थना मन्दिर को बनाया गया। इसमें २६८ सीढ़ियाँ हैं।

Photo by Ranbir S. Bakhshi
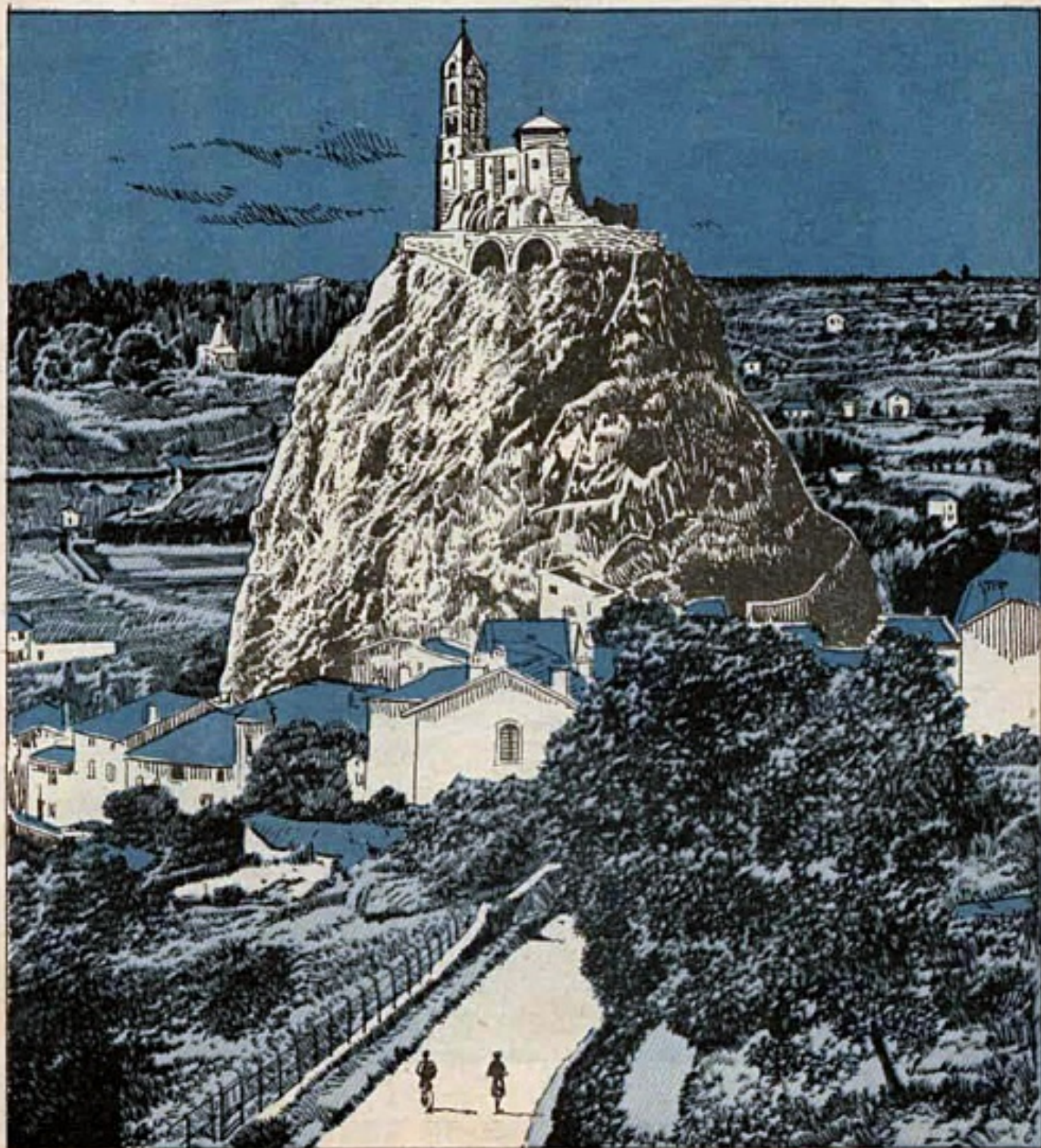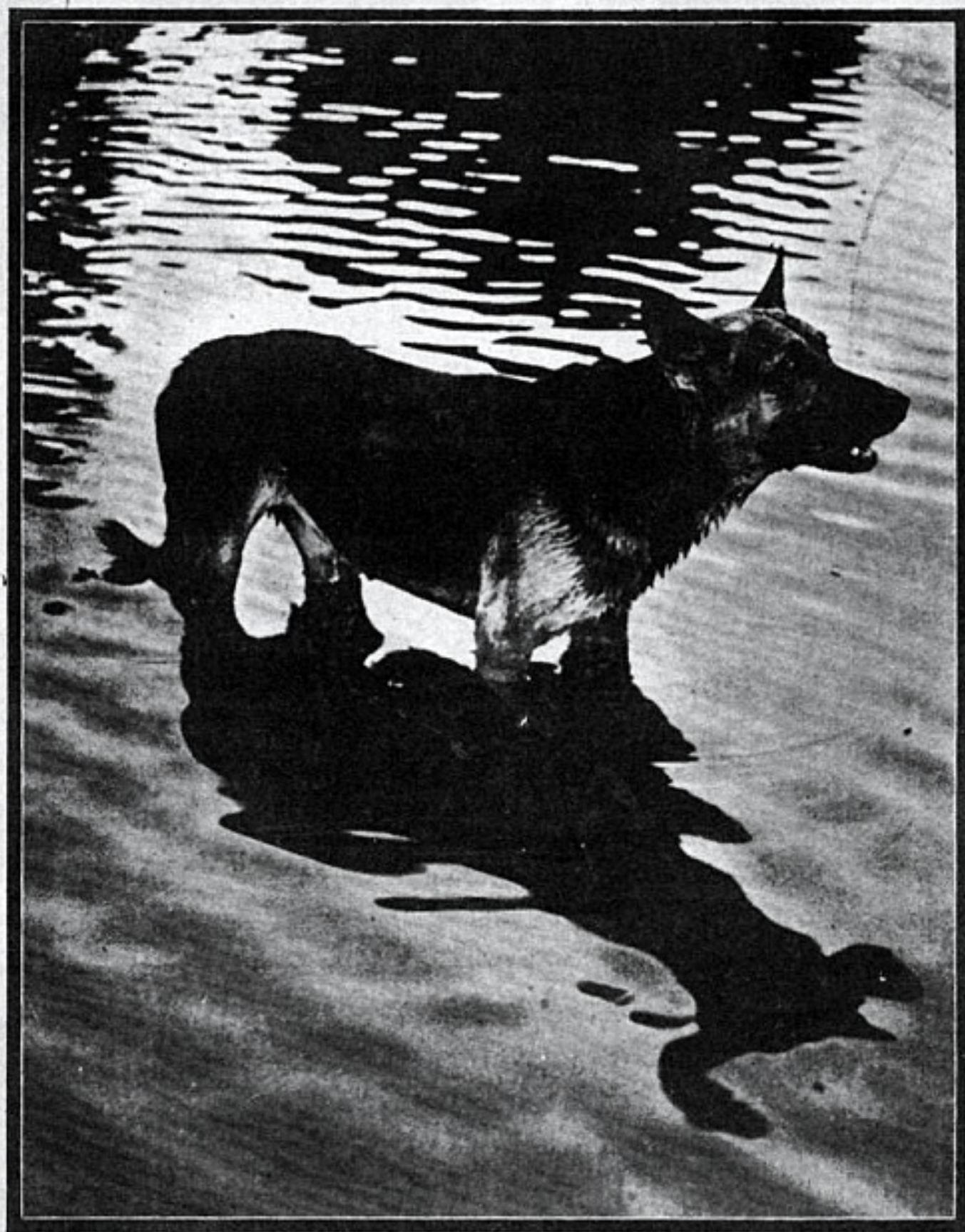
पुरस्कृत
परिचयोक्ति

देख रहा क्या, कर जा पार!

प्रेषिका :
मल्लिका टण्डन - कानपूर

Photo by H. G. Damodardas

पुरस्कृत परिचयोक्ति

लगता कितना अच्छा खिलवार !!

प्रेषिका : मल्लिका टण्डन - कानपूर

फ़ोटो - परिचयोक्ति - प्रतियोगिता

मार्च १९६६ :: पारितोषिक १०)

कृपया परिचयोक्तियाँ कार्ड पर ही भेजें !

ऊपर के फ़ोटो के लिए उपयुक्त परिचयोक्तियाँ चाहिए। परिचयोक्तियाँ दो तीन शब्द की हों और परस्पर संबन्धित हों। परिचयोक्तियाँ पूरे नाम और पते के साथ कार्ड पर ही लिखकर निम्नलिखित पते पर तारीख ७ जनवरी १९६६ के अन्दर भेजनी चाहिए।

फ़ोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता
चन्दामामा प्रकाशन,
वड़पलनी, मद्रास-२६

जनवरी – प्रतियोगिता – फल

जनवरी के फ़ोटो के लिए निम्नलिखित परिचयोक्तियाँ चुनी गई हैं। इनके प्रेषिका को १० रुपये का पुरस्कार मिलेगा।

पहिला फ़ोटो: **देख रहा क्या, कर जा पार!**

दूसरा फ़ोटो: **लगता कितना अच्छा खिलवार !!**

प्रेषिका: **मल्लिका टण्डन,**

C/o श्री. के. एन. टण्डन, १६/१७, सिविल लाइन्स, कानपुर - १.

Printed by B. NAGI REDDI at The B. N. K. Press Private Ltd., and Published by B. VISWANATHA REDDI for Sarada Binding Works, 2 & 3, Arcot Road, Madras-26. Controlling Editor: 'CHAKRAPANI'